January 2024

Monthly Magazine
Year 10 Issue 1

Satyug

नारायण रेकी सतसंग परिवार

In Giving We Believe

सत्युग

NARAYAN REIKI IN GIVING WE BELIEVE

IN GIVING WE BELIEVE

हमारा उद्देश्य

"हर इंसान तन, मन, धन व संबंधों से स्वस्थ हो
हर घर में सुख, शांति समृद्धि हो व
हर व्यक्ति उन्नति, प्रगति व सफलता प्राप्त करे।"

बुधवार सतसंग

प्रत्येक बुधवार प्रात ११ बजे से ११.३० बजे तक

फेसबुक लाइव पर

सतसंग में भाग लेने के लिए नारायण रेकी सतसंग परिवार के फेसबुक पेज को ज्वाइन करें और सतसंग का आनंद लें।

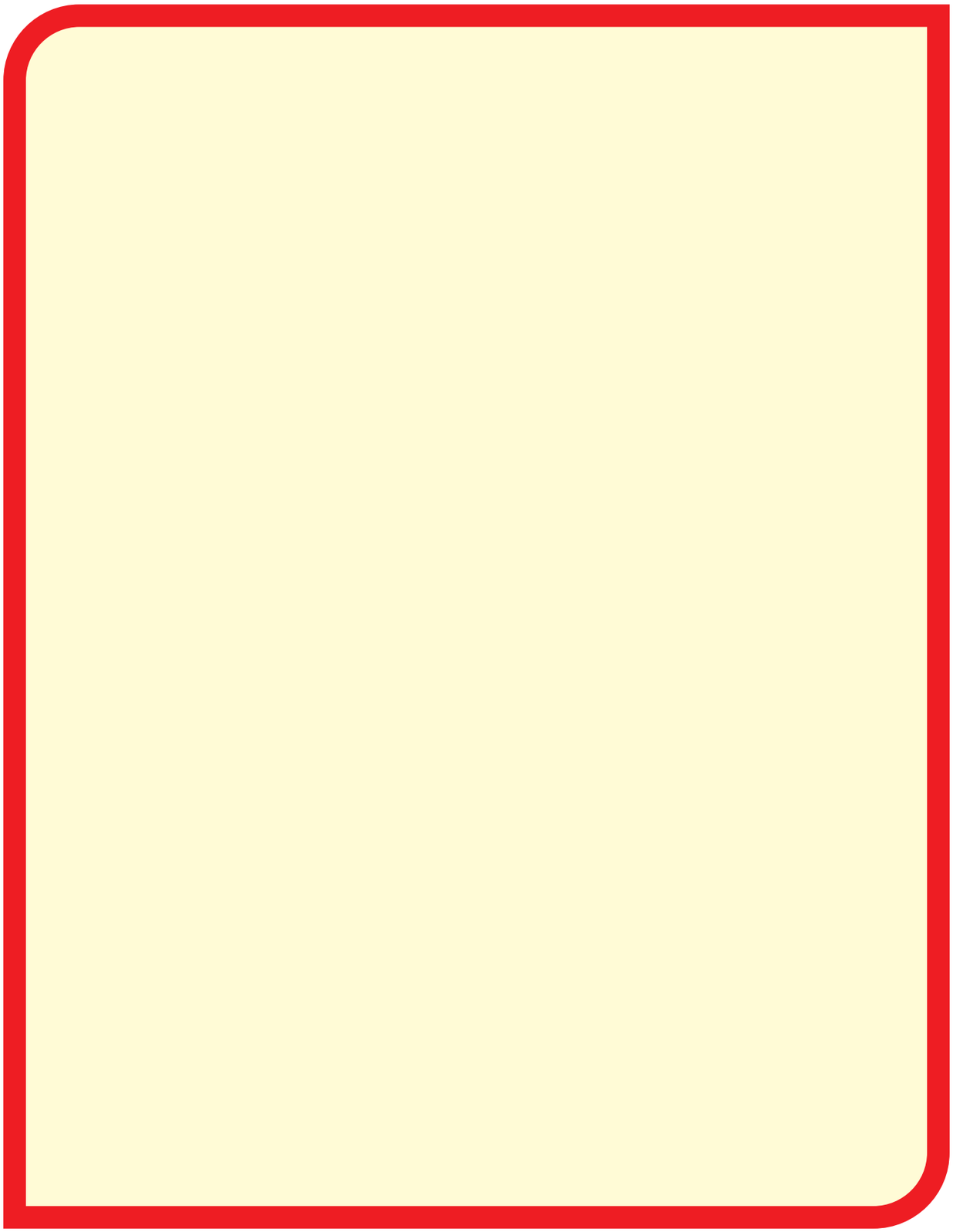

॥ 卐 ॥

पावन वाणी

प्रिय नारायण प्रेमियों,

॥ नारायण नारायण ॥

22 जनवरी 2024 का ऐतिहासिक दिवस जिसके साक्षी बने हम सब। हम कृपाशाली हैं, हम भाग्यशाली हैं कि हम एक ऐसे युग के साक्षी बने जिस युग में 500 वर्षों के पश्चात भगवान श्री राम अपने जन्मस्थल में पुनः जा विराजे।

श्री राम जिस कुल में जन्मे थे वह कुल प्रसिद्ध है अपनी एक विशेष रीति के लिए,

रघु कुल रीति सदा चली आई

प्राण जाए पर वचन न जाई ।

इस कुल की इस रीति ने ही भारत वर्ष को महाप्रतापी, दानवीर और मर्यादा पुरुषोत्तम राजे, महाराजे दिये । रघु कुल की यह रीत सही मायने में सार्थक और सफल जीवन की एक महत्वपूर्ण रीति सिखाती है । अपने कमिटमेंट पर अडिग रह कर अपने कर्त्तव्यों का पालन करने के लिए यदि हम कर्मशील रहते हैं तो उन्नति, प्रगति, सफलता, प्रसिद्धि हमारे पास सहज ही चल कर आ जाते हैं।

यह कमिटमेंट स्वयं का स्वयं से होना चाहिए । जब हम खुद से कमिटमेंट करते हैं तो हमें कोई नहीं परखता लेकिन हमारी अंतरात्मा हमें परख रही होती है, हम स्वयं का मूल्यांकन कर रहे होते हैं। ऐसे में हमारी हम से प्रतियोगिता चल रही होती है और हम अपना सर्वोत्तम देने के लिए प्रोत्साहित होते हैं और सफलता को हमारे पास आना ही पड़ता है ।

आज जब हम एक ऐसे ऐतिहासिक युग के साक्षी बने हैं जिस युग में श्री राम की पुनः प्राण प्रतिष्ठा हुई है तो यह हमारा भी कर्त्तव्य हो जाता है कि हम उन श्री राम भगवान से कमिटमेंट के गुण को सीखें और प्रयत्न करके अपने जीवन में उतारें ।

शेष कुशल

R. Modi

-: संपादिका :-

संध्या गुप्ता

09820122502

-: प्रधान कार्यालय :-

नारायण भवन
टोपीवाला कंपाउंड, स्टेशन रोड़
गोरेगांव वेस्ट, मुंबई

-: क्षेत्रीय कार्यालय :-

अहमदाबाद	जैविनी शाह	9712945552
अकोला	शोभा अग्रवाल	9423102461
अकोला	रिया अग्रवाल	9075322783
अमरावती	तरुलता अग्रवाल	9422855590
औरंगाबाद	माधुरी धानुका	7040666999
बैंगलोर	कनिष्का पोद्दार	7045724921
बैंगलोर	शुभांगीं अग्रवाल	9327784837
बैंगलोर	शुभांगी अग्रवाल	9341402211
बस्ती	पूनम गाड़िया	9839582411
बिहार	पूनम दूधानी	9431160611
भीलवाड़ा	रेखा चौधरी	8947036241
भोपाल	रेनू गट्टानी	9826377979
चेन्नई	निर्मला चौधरी	9380111170
दिल्ली (नोएडा)	तरुण चण्डक	9560338327
दिल्ली (नोएडा)	मेघा गुप्ता	9968696600
दिल्ली (डब्ल्यू)	रेनु विज	9899277422
धूलिया	रेणु भटवाल	878571680
गोंदिया	राधिका अग्रवाल	9326811588
गोहटी	सरला लाहोटी	9435042637
हैदराबाद	स्नेहलता केडिया	9247819681
इंदौर	धनश्री शिरालकर	9324799502
जालना	रजनी अग्रवाल	8888882666
जलगांव	काला अग्रवाल	9325038277
जयपुर	प्रीति शर्मा	9461046537
जयपुर	सुनीता शर्मा	8949357310
जयपुर	सुनीता शर्मा	8949357310
झुनझुनू	पुष्पा देवी टिबेरेवाल	9694966254
इचलकरंजी	जय प्रकाश गोयनका	9422043578
कोल्हापुर	राधिका कुमटेकर	9518980632
कोलकत्ता	स्वेटा केडिया	9831543533
कानपुर	नीलम अग्रवाल	9956359597
लातूर	ज्योति भूतड़ा	9657656991
मालेगांव	रेखा गारोडिया	9595659042
मालेगांव	आरती चौधरी	9673519641
मालेगांव	आरती दी	9518995867
मोरबी	कल्पना चोरौड़िया	8469927279
नागपुर	सुधा अग्रवाल	9373101818
नांदेड़	चंदा काबरा	9422415436
नवलगढ़	ममता सिंग्रोडिया	9460844144
नासिक	सुनीता अग्रवाल	9892344435
पुणे	आभा चौधरी	9373161261
पटना	अरबिंद कुमार	9422126725
पुरुलिया	मृदु राठी	9434012619
परतवाड़ा	राखी मनीष अग्रवाल	9763263911
रायपुर	अदिति अग्रवाल	7898588999
रांची	आनंद चौधरी	9431115477
सूरत	रंजना अग्रवाल	9328199171
सांगली	हेमा मंत्री	9403571677
सिकर (राजस्थान)	सुषमा अग्रवाल	9320066700
श्री गंगानगर	मधु त्रिवेदी	9468881560
सतारा	नीलम कदम	9923557133
शोलापुर	सुवर्णा बलदवा	9561414443
सिलीगुड़ी	आकांक्षा मुधरा	9564025556
टाटा नगर	उमा अग्रवाल	9642556770
राउरकेला	उमा अग्रवाल	9776890000
उदयपुर	गुणवंती गोयल	9223563020
उबलीं	पल्लवी मलानी	9901382572
वाराणसी	अनीता भालोटिया	9918388543
विजयवाड़ा	किरण झँवर	9703933740
वर्धा	रूपा सिंघानिया	9833538222
विशाखापतनम	मंजू गुप्ता	9848936660

अंतर्राष्ट्रीय केंद्र का नाम

ऑस्ट्रेलिया	रंजना मोदी	61470045681
दुबई	विमला पोद्दार	+971528371106
काठमांडू	रिचा केडिया	+977985-1132261
सिंगापुर	पूजा गुप्ता	6591454445
शारजाह	शिल्पा मंजरे	+971501752655
बैंकॉक	गायत्री अग्रवाल	66952479920
विराटनगर	मंजू अग्रवाल	+977980-2792005
विराटनगर	वंदना गोयल	+977984-2377821

॥ 卐 ॥

संपादकीय

प्रिय पाठकों,

॥ नारायण नारायण ॥

जय सिया राम, जय सिया राम के उदघोष से गुंजायमान होता विश्व भर, और ऐसे में रामलला का पुनः अपनी जन्मस्थली में स्थापित होना, भगवान श्री राम की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा और टीम सतयुग को अयोध्या धाम की यात्रा का सुनहरा मौक़ा मिलना । विश्वास ही नहीं हो रहा था कि राज दीदी के साथ टीम सतयुग अयोध्या धाम में उपस्थित है ।

एक स्वर्गिक आनंद की अनुभूति से शरीर की प्रत्येक कोशिका भर रही थी। रामलला के दर्शन और उनकी अनेकों खूबियाँ विस्तार से दीदी के समक्ष सुनी और समझीं ।

श्री राम सा तो बना ही नहीं जा सकता पर उनके व्यक्तित्व की बहुत सी खूबियों में से एक खूबी जो बड़ी आसानी से जीवन में उतारी जा सकती है वह है कमिटमेंट।

तो बस टीम सतयुग ने ठाना, क्यों न अपने सुधि पाठकों से इस बार कमिटमेंट के गुण पर चर्चा की जाये और बस इस विचार को साकार रूप देने में जुट गई टीम सतयुग। इस प्रकार यह अंक आ गया आपके सामने।

हम सब अपने कमिटमेंट पर अडिग रह कर अपने जीवन को सफल और सार्थक बनाते रहेंगे इस शुभकामना के साथ,

आपकी अपनी
संध्या गुप्ता

अंतरर्राष्ट्रीय कार्यालय :

नेपाल	रिचा केडिया	977985-1132261
आस्ट्रेलिया	रंजना मोदी	61470045681
बैंकाक	गायत्री अग्रवाल	66897604198
कनाडा	पूजा आनंद	14168547020
दुबई	विमला पोद्दार	971528371106
शारजहा	शिल्पा मांजरे	971501752655
जकार्ता	अपेक्षा जोगनी	9324889800
लन्दन	सी.ए. अक्षता अग्रवाल	447828015548
सिंगापुर	पूजा गुप्ता	6591454445
डबलिनओहियो अमेरिका	स्नेह नारायण अग्रवाल	1-614-787-3341

आपके विचार सकारात्मक सोच पर आधारित आपके लेख, काव्य संग्रह आमंत्रित है - सतयुग को साकार करने के लिये।आपके विचार हमारे लिये मूल्यवान हैं । आप हमारी कोशिश को आगे बढ़ाने में हमारी मदद कर सकते है । अपने विचार उदगार, काव्य लेखन हमें पत्र द्वारा, ई-मेल द्वारा भेज सकते हैं ।
हमारा ई-मेल है 2014satyug@gmail.com

we are on net

narayanreikisatsangparivar @narayanreiki

प्रकाशक : नारायण रेकी सतसंग परिवार
मुद्रक : श्रीरंग प्रिन्टर्स प्रा. लि. मुंबई.
Call : 022-67847777

||नारायण नारायण||

कमिटमेंट करना और उस कमिटमेंट पर टिके रहना विशेषकर उस परिस्थिति में जब बात आपकी जान और मान पर आ जाये पर कमिटमेंट की ख़ातिर अपनी जान,आन और मान की परवाह न करना आपको राम बनाता है । क्या है राम आइये समझते हैं -

राम – राम

'रा' का अर्थ है प्रकाश और 'म' का अर्थ है ' मेरे भीतर का प्रकाश'। जो हमारे भीतर चमकता है वह राम है, जो सृष्टि के कण–कण में दीप्तिमान है, वह राम है।

'राम' एक व्यक्तित्व नहीं बल्कि संपूर्ण ब्रह्मांड को समेटे हुए वह परम् शक्ति है जो आदि से ले कर अंत तक सभी ओर व्याप्त है। यह शक्ति मेरे भीतर है , आपके भीतर है सबके भीतर है यानी हम सबके भीतर उस परम राम का अंश है जिसे हम निखार सकते हैं, उभार सकते हैं अपने सद्कर्मों से, विचार वाणी, व्यवहार की साधना से । राम का उच्चारण करते ही हमारा हृदय किसी व्यक्ति विशेष से नहीं बल्कि उस निराकार शक्ति से, बिना किसी प्रयास के ही हमें जोड़ लेता है। हमारी श्वांस की आवन जावन राम है। समझते हैं कैसे ? नारायण रेकी के माध्यम से । जब हम 'रा' कहते हैं तब हमारा मुख खुलता है और भीतर की नकारात्मकता को बाहर निकालते हैं और सकारात्मकता (ऑक्सीजन) को अंदर लेते हैं । जब हम 'म' कहने के लिए अपने मुख को बंद करते हैं तो सकारात्मकता (ऑक्सीजन) हमारे शरीर की एक एक कोशिका में प्रवाहित होने लगती है और मशीन रूपी यह शरीर कार्य करने लगता है ।

कलयुग में मोक्ष प्राप्त करने का सरलतम मार्ग है, राम नाम। रामचरितमानस के रचयिता, गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं कि अपनी जिह्वा पर राम नाम का मोती रख लोगे तो भीतर और बाहर, दोनों ओर उजाला व्याप्त हो जाएगा। इस बात को नारायण रेकी सत्संग परिवार भी स्वीकार करता है । हमारी राम नाम लेखनी पुस्तिका में लिखने से हुए अनेकों चमत्कार भी तुलसीदास जी की इस बात से इत्तेफ़ाक रखते हैं ।

भगवान विष्णु के सांतवे अवतार, त्रेता युग में जन्मे राम, उस परम शक्ति के गुणों, सत्य, ज्ञान, सौंदर्य, शक्ति और आनंद का अनावरण करते हैं । राम नर भी हैं, नारायण भी, मानव हैं और दिव्य भी, कर्ता भी हैं और कृति भी, राम रचयिता भी हैं और रचना भी, सगुण साकार भी हैं और निर्गुण निराकार भी। मार्ग भी राम हैं और लक्ष्य भी राम हैं।

राम, एक पुरुष के पुरुषोत्तम हो जाने का दृष्टांत है। राम का चरित्र मर्यादा के सर्वोच्च चरण का वह उदाहरण है, जिसकी किसी भी परिस्थिति में कल्पना करके, उस परिस्थिति का सर्वाधिक मर्यादित समाधान खोजा जा सकता है।

राजा राम रघुकुल की उस रीति के वाहक हैं जहां, 'रघुकुल रीति सदा चली आई प्राण जाये पर वचन न जाई' का उदघोष है । यह उदघोष ही एक पिता (दशरथ) को अपने प्राणों से प्रिय पुत्र (राम) को वनवास भेजने पर मजबूर हो जाता है । यह वादे का ही जयघोष है जो राजकुमार राम को 14 वर्ष के वनवास पर ले जाता है । यह ही उदघोष लक्ष्मण को अपने बड़े भ्राता श्री राम जी के साथ वन-वन फिरने के लिए प्रेरित करता है । कमिटमेंट का यह उदघोष ही भरत को 14 वर्षों तक सिंहासन पर राम जी की चरण पादुका रख कर राजा राम की ग़ैर हाज़िरी में राजपाठ संभालने को प्रेरित करता है । यह एक पत्नी (उर्मिला) का अपने पति (लक्ष्मण) से सप्तपदी के समय किया वादा है कि वह हर पल, हर क्षण अपने

पति का साथ देंगी । पति जागृत रह अपने भाई भाभी की सेवा कर सके इसलिए सुकुमारी उर्मिला 14 वर्ष तक निद्रा रानी की गोद में चली गई । यह सिर्फ़ संभव हुआ रघुकुल की उस रीति की वजह से, प्राण जाये पर वचन न जाये ।

राम के वनवास से लौटने पर जनता द्वारा दीवाली मना कर उनका स्वागत करना, अश्रुपूरित आँखों से सिंहासन पर बैठाना और उन्हें एक शासक के रूप में स्वीकारना इसी जयघोष के कारण संभव हुआ ।

उच्च दर्जे का कमिटमेंट, भक्ति का स्वरूप कैसे लेते हैं, यह हम श्री राम के परम् भक्त हनुमान जी के चरित्र से आसानी से समझ सकते हैं ।

हनुमान जी रावण की लंका में बड़ी ही शांति से प्रवेश करते हैं। शांतिपूर्वक हंसते हुए रावण के दरबार में प्रश्नों का जवाब देते हैं और उकसाए जाने पर भी शांतिपूर्ण तरीक़े से लंका का दहन करते हैं और राम राम का जय घोष करते हैं ।

राम भक्ति की प्रथम वरीयता है विनम्रता। राम साधना का प्रथम सोपान है शांति। इसलिए राम नाम कभी युद्ध के उद्घोष से नहीं बल्कि अध्यात्म की धुन से जुड़ता है, इसलिए राम बोलने के बाद हमारे होठ बंद हो जाते हैं, जैसे कि कह रहे हों अब और कुछ भी बोलने को शेष नहीं है। 'राम' एक शब्द नहीं बल्कि अपने आप में सारे ब्रह्मांड को समेटे हुए एक अद्वतीय मंत्र है।श्री राम का चरित्र जीत और हार से नहीं बल्कि मर्यादा की सर्वोत्तम तरीके से उपयोगिता से परिभाषित होता है। राम को संसार महान कहता है, इसलिए कि उन्हें कठिन क्षणों में धैर्य धारण करना आता है, उन्होंने किसी भी समय अपना आपा नहीं खोया, चाहे फिर वह मां कैकई का आदेश हो 14 वर्ष वनवास जाने का, या फिर सीता का हठ हो, सुनहरे हिरण को ढूंढ लाने का। राम तो हर परिस्थिति में धीरवान रहते हैं, सामने वाले का भला, उसकी मनोदशा की चिंता करते हैं। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी संयमित रहने वाला राम हो गया और मन की इच्छा पूरी ना होने पर अपना आपा खो देने वाला रावण हो गया।

एनआरएसपी में राज दीदी भी हमें यही सिखाती हैं कि हर परिस्थिती में संयमित रह कर विवेकपूर्ण आचरण करें, स्वयं का ही नहीं, सबके भले की, सबके कल्याण की सोचते हुए निर्णय लें। ऐसा करना सर्वथा आसान नहीं होता है, परंतु दूरगामी परिणाम देखें तो इसी में हमारा परम हित है, क्योंकि यह प्रकृति सारा लेखा जोखा रखती है और आपके द्वारा किए गए कल्याण के कार्य की एवज में आपका जीवन सातों सुखों से परिपूर्ण करने का बीड़ा उठाती है। कैसी भी परिस्थिती हो, राम ने मर्यादा का दामन नहीं छोड़ा। मंथरा के राम को वनवास भेजने के षडयंत्र को राम ने अपने सहज व्यवहार से सहर्ष स्वीकार कर लिया। कैकई और मंथरा ने स्वप्न में भी नहीं सोचा होगा कि उनके द्वारा रचे जा रहे इस षडयंत्र के प्रभाव से राम ऐसा आचरण करेंगे और कैकई अपने ही पुत्र भरत की नज़रों में सदा के लिए गिर जाएंगी। राम ने अपने वचन से बंधे हुए पिता दशरथ से एक क्षण के लिए भी विवेचना करने की आवश्यकता नहीं समझी और तुरंत ही अपने पिता के आदेश की पालना करने में लग गए। राम का आचरण कल्पना से परे था, ऐसा राम ही कर सकते थे अन्य और कोई नहीं। राम ने कलह होने के हर द्वार को बंद कर दिया। राम जहां हों वहां सिर्फ मर्यादा और नैतिकता ही रहती है, उनके व्यवहार के सामने हर तरह का षडयंत्र घुटने टेक देता है। राम किसी भी परिस्थिति का सर्वोत्तम व सर्वोचित तरीके से, सबके हितार्थ का रास्ता सहज ही निकाल लेते हैं । इसलिए राम के द्वारा लिए गए निर्णय युगों युगों के बाद, आज भी हर वर्ग में, उतने ही प्रासंगिक हैं, उतने ही अनुकूलनीय हैं। राम अपनी राह स्वयं बनाते हैं। राम की नैतिकता

युगातीत है। राम की नैतिकता समय की सीमाओं के परे है, इसलिए राम युगातीत हैं।

राम के भक्त भी उतने ही विवेकी और मर्यादित हैं जितने कि उनके आराध्य। इसका प्रमाण अनेकों दृष्टांतों से मिलता है। उनमें से एक है हनुमान जी का लंका में जाना। जब उनकी पूंछ जला दी गई, तब भी उन्होंने विवेक से निर्णय लिया और लंका को आग लगाते समय माता सीता जहां थीं, उस अशोक वाटिका के आस पास एक चिंगारी तक आने नहीं पाई।

आइये राम से सीखें और अपने भीतर बैठे राम को जागृत कर जीवन को सफल और सार्थक बनायें। राम को प्राप्त कैसे करें यह बताती हुई यह बहुत ही विलक्षण कविताः-

तब राम मिले थे...

तब राम मिले थे काकभुशुंडि की वाणी में।
अब भी राम मिलेंगे राम नाम को जपने में।।

तब राम मिले थे तुलसीदास की चौपाईयों में।
अब भी राम मिलेंगे उन चौपाईयों का अनुसरण करने में।।

तब राम मिले थे दशरथ को निभाते वचनों में।
अब भी राम मिलेंगे पिता की आज्ञा पालन करने में।।

तब राम मिले थे कौशल्या की ममता में।
अब भी राम मिलेंगे मात–पिता की सेवा में।।

तब राम मिले थे सीता को पवित्रता में।
अब भी राम मिलेंगे निज मन को पवित्र रखने में।।

।।卐।।

तब राम मिले थे लक्ष्मण को सेवा करने से।
अब भी राम मिलेंगे जन–जन की सेवा करने में ।।

तब राम मिले थे बजरंग बली के सीने में।
अब भी राम मिलेंगे भक्ति राम की करने में ।।

तब राम मिले थे अनुसूइया को मानवता में।
अब भी राम मिलेंगे मानवता बनाये रखने में ।।

तब राम मिले थे शबरी को झूठे बेर खिलाने में।
अब भी राम मिलेंगे भूखों को भोजन कराने में ।।

तब राम मिले थे घायल जटायु को दर्द में।
अब भी राम मिलेंगे निर्धन बेसहारों को सम्भालने में ।।

तब राम मिले थे अयोध्या को मर्यादाओं में।
अब भी राम मिलेंगे मर्यादाओं में रह कर चलने में ।।

'हम दूसरों की जो भी मदद करते हैं, सेवा करते हैं वह कभी भी व्यर्थ नहीं जाती है। समय रहते फलित होती ही हैं ।

श्री रामलालजी जोशी लिखते हैं – मैंने अपने जीवन काल में बिना किसी आशा के, बिना किसी उम्मीद के, बिना किसी स्वार्थ के निःस्वार्थ भाव से सेवा की है और इसने मुझे आश्चर्यजनक परिणाम दिए। यह सेवा इस कदर फलीभूत होगी, मुझे भी उसकी कल्पना नहीं थी।

श्री रामलाल जी जोशी लिखते हैं कि यह उन दिनों की बात है जब वे जयपुर के सरकारी अस्पताल में कंपाउंडर की नौकरी किया करते थे। रामलाल जी जोशी गांव में एक जमीन के मालिक थे। लेकिन एक शक्तिशाली और धनी व्यक्ति ने उनके खिलाफ मामला दर्ज किया था। विरोधी पार्टी धनवान थी, बलवान थी। केस की तारीख़ आगे सरकाती चली जाती थी। मैं बहुत परेशान था लेकिन तनाव को अपने काम पर प्रभावित नहीं होने देता था क्योंकि मेरे पास ना तो पैसा था और ना ही बल था हालांकि जमीन तो मेरी ही थी।

राम लाल जी जोशी आगे लिखते हैं कि मैं कंपाऊण्डर था, अस्पताल का एक वार्ड मेरी निगरानी में था। उस वार्ड में एक बुजुर्ग व्यक्ति एडमिट थे, कई समय से अस्वस्थ चल रहे थे। उनका बेटा शाम के वक्त दवाइंया और भोजन लेकर आता, रात भर रुकता और सुबह जल्दी निकल जाता। मुझे पता चला कि वह सवाई माधोपुर से रोज़ दो घंटे की रेल यात्रा करके आते हैं और वह 'न्यायिक मजिस्ट्रेट' हैं। दिन भर अदालत में Duty करते हैं, शाम को पिताजी के पास जयपुर आते हैं, फिर सुबह सवाई माधोपुर जाते हैं। एक दिन मैंने उनसे कहा कि भैया आप इतने परेशान होते हैं, दिन भर अदालत में Duty करके शाम को यहां आते हैं, इससे बेहतर यह होगा कि आप सिर्फ शनिवार – रविवार आ जाया करें, बाकी पांच दिन आपके पिताजी की सेवा मैं कर दूंगा। मैंने उन्हें यह भी कहा कि आपके जाने के बाद डॉक्टर विजिट् पर आते हैं, दवाइयां लिखकर देते हैं और पूरे 8-10 घंटे आपके पिताजी को बिना दवाइयों के रहना पड़ता है क्योंकि आप आने के बाद दवाइयां खरीद कर लाते हैं। एक लंबा समय निकल जाता है, बेहतर होगा आप विश्वास करके मेरे ऊपर छोड़ दीजिए। श्री रामलाल जी लिखते हैं कि मेरे बेहद आश्वासन देने के बाद वो मान गए, उन्होंने हामी भर दी।

मेरी दिनचर्या इस प्रकार शुरू हो गई कि मैं घर से निकलता, ताजे फल खरीदता, अस्पताल आकर उन्हें खिलाता। एक चपरासी से मैंने बात कर रखी थी, वह उन्हें आकर गरम-गरम पानी से स्नान करा देता और उनका बिस्तर ठीक कर देता। एक धोबी से मैंने बात कर रखी थी, वह उनके कपड़े धोकर ले आता। कैंटिग से मैं उनके लिए गरम-गरम दलिया, खिचड़ी, दाल फलका बनवा के उन्हें खिला देता था। मुझे जैसे ही समय मिलता मैं उनके पास चला जाता और उनसे बातें कर लेता। ऐसे ही समय बीतता जा रहा था और मेरी सेवा रंग लाई। जो व्यक्ति कई महीनों से अस्पताल में एडमिट थे वह 27 दिनों में पूरी तरह स्वस्थ हो गए। जब वह बुजुर्ग व्यक्ति स्वस्थ होकर जा रहे थे तब उन्होंने एक अच्छी खासी रकम मुझे पारितोषिक के रूप में देनी चाही। मैंने यह कह कर मना कर दिया कि मैंने अपना कर्त्तव्य पूरा किया है, अपनी Duty पूरी की है, मैं आपसे पैसा नहीं लूंगा। उनके बेटे (न्यायिक मजिस्ट्रेट) ने भी मुझे कुछ रकम देने की कोशिश की। मैंने उनसे कहा कि 'मैंने आपको जो वचन दिया था वह वचन मैंने पूरा किया है, मैं आपसे पैसे नहीं लूंगा।'

श्री रामलाल जी लिखते हैं कि जब वे जा रहे थे तब उन्होंने मुझसे कहा – 'तुम्हारे भाव जानकर हमें बहुत अच्छा

लगा। तुमने मेरे पिताजी की बहुत सेवा की। तुम्हारी वजह से मेरे पिताजी ठीक हो गए। भविष्य में तुम्हें मुझसे कभी भी कोई भी काम होगा तो जरूर से मुझे कहना। मैंने उनसे विनम्रता पूर्वक कहा कि मेरा आपसे क्या काम पड़ेगा.?' जयपुर के निकट विराट नगर एक छोटा सा गांव है, मैं वहां रहता हूं। सवाई माधोपुर मेरा आना-जाना नहीं होता और आप जैसों से मेरा काम नहीं पड़ता और कभी पड़ने वाला भी नहीं है। आप जब भी इधर आएंगे तो मुझे ज़रूर मिलीएगा यही विनती है मेरी आपसे।'

वर्षों बाद मुझे किसी झूठे केस में फँसा दिया गया और जब मुक़दमे के फ़ैसले का समय आया तो जज साहब कोई और नहीं यह ही साहब थे ।

उन्होंने मेरा निर्णय सुनाते हुए यह वर्षों पुराना वाक़या सुनाया और मेरे पक्ष में निर्णय दिया ।

दूसरों से अच्छाई चाहते हो तो पहले अपने इर्द-गिर्द के लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करना शुरू कीजिए।

राज दीदी ने सत्र में कहा, हमारे गोरेगांव सेंटर पर सेवा देने के लिए कई लोग आते हैं। एक 60 वर्षीय महिला ने हमसे कहा कि उनका बेटा जो कि उच्च शिक्षित हैं, MBA , CA पढ़ा-लिखा है,एक मल्टिनैशनल कंपनी में उच्च पद पर कार्यरत हैं, मोटा पैकेज मिलता है, सब बढ़िया है। उसे सिर्फ एक परेशानी है कि उसके बॉस से उसकी बनती नहीं है। उसके बॉस ने उसे परेशान कर रखा है। मेरा बेटा अपना काम पूरा कर लेता है, उसके बाद बॉस उसे और अतिरिक्त काम ला ला कर देता है। ये भी पूरा करो, ये भी पूरा करो और ये भी पूरा करो। 8:00 बजे तक का ऑफिशल टाइम है, मेरा बेटा 4 साल से नौकरी कर रहा है, 11:00 बजे के पहले वो बॉस उसे छोड़ता नहीं है। मेरा बेटा काम तो कर लेगा, वह काम से नहीं थकता पर जितना वो काम करता है उतना ही उसके काम में मीन मेक निकाला जाता है। वापस वापस करवाया जाता है तो मेरा बेटा परेशान हो जाता है। ऐसी कोई प्रार्थना बताइए ताकि वो बॉस और मेरे बेटे के संबंध अच्छे हो जाएं।

प्रार्थना बताई गई और मनचाहा नतीजा नहीं मिल रहा था, वह बारंबार हमारे पास आती और कहती कि अभी भी फरक नहीं आया है। राज दीदी ने कहा कि तुम्हारा बेटा इतना परेशान हो रखा है, वह इतना पढ़ा लिखा है तो नौकरी कहीं और कर लेगा, उसे कहिए कि वहां से नौकरी छोड़ दे। उन्होंने कहा कि उसका पैकेज बहुत मोटा है, नौकरी नहीं छोड़ सकता है वह। इस पर राज दीदी ने उनसे कहा कि एक काम करो, तुम्हारे बेटे को हमारे पास भेजो, पता तो चले कि कहाँ रुकावट आ रही है और उनके बेटे के स्वभाव के बारे में माँ से पूरी छानबीन कर ली। उसका स्वभाव कैसा है? क्रोध वाला है? जिद्दी है? अड़ियल है? उस लड़के की मां ने राज दीदी को बताया कि वह ऑफिस से घर आता है तो जूता यहां खोला, बैग वहाँ पटका, चश्मा वहाँ रखा, लैपटॉप कहाँ रखा, इसमें wallet रखा और सुबह जब ऑफिस जाना होता है तो चीखना कि मेरा सामान किधर है, यह किधर है, वह किधर है, इस तरह सब अस्त – व्यस्त कर देता है। रोज सुबह का उसका नियम है कि चिल्लम – चिल्ली कर के घर से निकलना। हम सभी इसलिए शांत रहते हैं कि वह शांति से ऑफिस चला तो जाये। बेचारी माँ, ऐसी उसके बेटे की अवस्था थी। सब स्वभाव हमने मालूम कर लिया। दूसरे दिन जब वो हमसे मिलने के लिए आया तो बातचीत के दौरान हमने उनसे पूछा कि भाई कितने बजे ऑफिस जाते हो.? वह

बोला 9:00 बजे निकलता हूँ। उठते कितने बजे हो.? उसने कहा 8:30 तक। हमने कहा आधे घंटे में तैयार हो जाते हो.? बोला मम्मी सब रेडी करके रखती है, मैंने नाश्ता किया तो किया, नहीं तो ऐसे ही निकल जाता हूं। भीतर की सारी बातें तो हमें मालूम ही थी कैसा स्वभाव है उसका। थोड़ा समझा बुझाकर उसे इस बात पर लाये कि सारा काम जो तुम्हें खुद करना चाहिए, वो तुम तुम्हारी माँ पर छोड़ देते हो और निकलते निकलते भी चीखते चिल्लाते जाते हो, परेशान करते भी जाते हो इसलिए ऑफिस में जाकर तुमको परेशानी भुगतनी पड़ती है, अतिरिक्त कार्य करना पड़ता है।

हमने उससे कहा कि घर में अपना सारा काम ठीक से किया करो ताकि ऑफिस में तुम्हें अतिरिक्त कार्य ना करना पड़े। वह बोला, आंटी ऐसा होता है क्या.? मैं नहीं मानता। मैंने कहा, भैया आठ दिन ट्रायल कर लो। यदि आपको मनचाहा नतीजा मिलता है तो आगे बढ़ो, अन्यथा तुम अपनी जगह हम अपनी जगह। अगले दिन से उसकी माँ से तो हमको रिपोर्ट मिल ही रही थी। उसकी मां ने हमसे कहा बराबर सुबह एक घंटे पहले उठ गया, बिस्तर समेटकर गया, जो नाश्ता था वो प्रेम से खा कर गया, सामान को व्यवस्थित रखा, सारा काम बेहद डिसिप्लिन के साथ किया। उसने माँ बाप से भी बहुत प्रेम से बातें की, सब बढ़िया चलने लगा। तीसरे दिन उस लड़के का फ़ोन हमारे पास रात को 8:00 बजे आया कि आंटी चमत्कार हो गया। 4 साल से नौकरी कर रहा हूँ, आज पहली बार, फर्स्ट टाइम मेरे बॉस ने मुस्कुराते हुए मुझे 8:00 बजे छुट्टी दे दी कि जाओ तुम। बेटे ने अब यह समझ लिया कि सबसे पहले हमें अपने अपनों से अच्छा व्यवहार करना चाहिए, बाकी सब अपने आप ठीक हो जायेगा।

प्रेम जताओ

जिस व्यक्ति को आप कहते हैं कि मैं तुम से प्रेम करता हूँ या मैं तुम से प्रेम करती हूँ तो उस व्यक्ति के साथ वैसा ही व्यवहार करें ताकि आपके व्यवहार से साफ झलके कि आप हकीकत में उनसे प्रेम करते हैं। यह निश्चित है कि यह दिन हमें दोबारा नहीं मिलने वाला है, इसलिए इसे भरपूर जिएं और इसका भरपूर सदुपयोग कर लें।

राज दीदी ने आगे कहा कि हम नारायण से प्रार्थना करते हैं कि जब आप इस सार्थक जीवन की ओर कदम बढ़ा रहे हैं तो हमारी झोली में वो क्या – क्या चीजें भर दें वह सुन लीजिए – 'मुझे मान मिले, सम्मान मिले, मान मिले, सम्मान मिले, खुशियों का वरदान मिले और सूरज रोज़ संवारे दिन को, चाँद नए सपने ले आए, हर पल समय दुलारे आपको, हर पल समय दुलारे आपको और सदियों तक पहचान मिले, सदियों तक पहचान मिले, सदियों तक पहचान मिले।

शांति कलश मैडिटेशन

अब जब हमने अपना कदम सार्थक जीवन की ओर बढ़ा लिया है तो हमें अपना 100% देना है और मन में यह सोच लेना कि मुझे यह करना ही है। सभी NRSP की रिक्वेस्ट से राज दीदी ने 'शांति कलश मेडिटेशन' करवाया। 'नारायण नारायण' की गूंज से सभी ने 'शांति कलश मेडिटेशन' करवाने की इच्छा व्यक्त की। राज दीदी ने आगे कहा – हमारा यह ब्रह्मांड अदृश्य एवं अलौकिक शक्तियों से भरा हुआ है।

राज दीदी ने कहा कि ध्यान साधना के दौरान एक 'शांति कलश' से हमारा संपर्क हुआ, उससे हम किस तरह संपर्क कर सकते हैं और अपने भीतर शांति कैसे भर सकते हैं, क्योंकि हमने देखा कि हमारी सबसे अधिक प्राथमिकता है कि हम सभी को 'Peace of Mind' चाहिए। हमारे पास काउंसलिंग के लिए जो लोग आते हैं वह धन – सम्पत्ति के लिए नहीं, 'मन की शांति, Peace of Mind' के लिए आते हैं। लोग हमें पूछते हैं कि 'Peace of Mind' के लिए क्या कुछ उपाय किया जाए, कृपया करके बताएं कि कैसे हमारा मन शांत हो, दिमाग शांत हो और घर में शांति बनी रहे। राज दीदी ने कहा कि यदि हम शांति पकड़ लेंगे तो घर में शांति अपने आप आ जाएगी।

राज दीदी ने आगे कहा – आंखें बंद कर लीजिए और ध्यान से सुनिए, आपको जैसे – जैसे बताते जाते हैं वैसे वैसे आपको करते जाना है। सबसे पहले हमने कहा 'नारायण हेल्प।' हमने नारायण से इसलिए हेल्प मांगी कि ब्रह्मांड में जो अदृश्य 'शांति कलश' है उससे वो हमारा संपर्क करवा दे, नारायण ने हमारी विनती सुन ली और हमारा संपर्क उस 'शांति कलश' से करवा दिया। अब हमने नारायण से एक और रिक्वेस्ट की, कि वो 'शांति कलश' हमारे सर पर, क्राउन चक्र पे रख दे और उसके भीतर से शांति हमारे शरीर में प्रवेश करती जाए। उसके लिए हम 14 बार जाप करेंगें 'हे नारायण आपका धन्यवाद है, हमारे भीतर असीम शांति है, असीम शांति है, असीम शांति है।आपको भी साथ में बोलना है, 'हमारे भीतर असीम शांति है, असीम शांति है, असीम शांति है।'

युवा मंच

जो प्रतिज्ञा आप अपने साथ करते हैं और लगातार उस पर काम करते हैं, उसे प्रतिबद्धता के रूप में परिभाषित किया जाता है।

शुरुआत करने के लिए, व्यक्ति को कुछ बुनियादी प्रतिबद्धताएँ निभानी होंगी जैसे कि सत्मार्ग का अनुसरण करना, एक नियोजित समय सारिणी का पालन करना और अपने कर्त्तव्यों के प्रति ईमानदार रहना।

कुछ अनकही प्रतिबद्धताएँ हैं जो आप घर, कार्यस्थल और समाज में पूरी कर रहे होते हैं।

भले ही आप सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ें और हर महान उपलब्धि हासिल कर लें पर भूतकाल में की गई प्रतिबद्धताओं को कभी न भूलें। नई प्रतिबद्धताएं बनाना अच्छी बात है, लेकिन पुरानी प्रतिबद्धताओं को भूलने से न केवल आपमें अपराध बोध पैदा होगा, बल्कि दूसरों की नज़रों में आपकी गलत छवि भी बनती है।

ध्यान रखें कि आपकी प्रतिबद्धताएं किसी स्वार्थ, किसी को नीचा दिखाने के इरादे से नहीं होनी चाहिए, बल्कि अपनी और दूसरों की भलाई को ध्यान में रखते हुए ईमानदारी से की जानी चाहिए।

किसी व्यक्ति की सफलता सीधे तौर पर उन प्रतिबद्धताओं पर निर्भर करती है जिन प्रतिबद्धताओं को व्यक्ति दृढ़ इच्छाशक्ति और दृढ़ संकल्प के साथ पूरा करने में सक्षम होता है।

प्रतिबद्धता का सबसे ताजा उदाहरण वर्तमान सरकार की अयोध्या में राम मंदिर निर्माण की प्रतिबद्धता है।

हमारे प्रधानमंत्री जी के सशक्त नेतृत्व में भारत ने वह कार्य पूरा किया है जो सदियों से लंबित था।

हमारे प्रधान मंत्री ने विभिन्न अवसरों पर प्रदर्शित किया है कि वे जो प्रतिबद्धताएँ करते हैं, उन्हें धैर्य और दृढ़ संकल्प के साथ पूरा भी करते हैं।

आज के युवाओं को प्रतिबद्धताओं को गंभीरता से लेने की ज़रूरत है, चाहे वह वैवाहिक संबंध हो, कार्यक्षेत्र हो, व्यक्तित्व विकास हो या भारत के एक ज़िम्मेदार नागरिक के रूप में कर्तव्य हों।

विवाहित जोड़े के बीच ईमानदारी, वफादारी, निष्ठा और विश्वास बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह एक अनकही प्रतिबद्धता है जो दोनों भागीदारों को विवाह बंधन में बंधने से पहले अनिवार्य रूप से करनी चाहिए।

नौकरी और व्यवसाय में भी अपने संगठन के प्रति ईमानदारी, निष्ठा और वफ़ादारी एक महत्वपूर्ण प्रतिबद्धता है।

अच्छे मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए, व्यक्ति को ध्यान का अभ्यास करने और कुछ प्रकार के व्यायाम करने की प्रतिबद्धता की आवश्यकता होती है।

जहाँ तक समाज का सवाल है, सतयुग लाने में एक माध्यम बनने की आपकी प्रतिबद्धता सर्वोपरि है। सुनिश्चित करें कि न केवल भारत बल्कि पूरे विश्व का प्रत्येक युवा विचारों, शब्दों और कर्मों से सकारात्मक बने और सप्त सितारा जीवन जीए।

जनवरी का महीना उन प्रतिबद्धताओं और संकल्पों को समर्पित है जो हम लेते हैं, निभाते हैं। हम इसे अधिकतर समय सफल बनाए रखने की पूरी कोशिश करते हैं।

टीम सतयुग ने प्रतिबद्धताओं पर एनआरएसपी के विचारों को विस्तृत करने का निर्णय लिया।

एनआरएसपी का मानना है कि जब भी हम कोई प्रतिबद्धता लेते हैं, तो यह हमारी नैतिक ज़िम्मेदारी है कि हम इसे निभाएं।

आर्ट टुरॉक का कहना है कि रुचि और प्रतिबद्धता के बीच अंतर है। जब आप कुछ करने में रुचि रखते हैं, तो आप उसे तभी करेंगे जब समय मिलेगा, लेकिन जब आप कुछ करने के लिए प्रतिबद्ध होते हैं तो कोई बहाना नहीं बनता, केवल परिणाम मिलता है।

एन आर एस पी की संस्थापिका राज दीदी की प्रतिबद्धता तब प्रदर्शित होती है जब वह अपनी टीम के साथ ब्रह्ममुहूर्त में साधना करती हैं । दीदी का चाहे भारत में कोई सत्र हो या विदेश में, चाहे पारिवारिक अवकाश में, दीदी स्वयं और उनकी टीम प्रातः 4.30 बजे की साधना में शामिल होती ही हैं। यात्रा के दौरान कई बार ऐसा होता है जब दीदी सुबह-सुबह अपने गंतव्य पर पहुंच जाती हैं लेकिन ब्रह्ममुहूर्त साधना हमेशा उनकी प्राथमिकता होती है क्योंकि यह सभी सत्संगियों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता है।

दीदी हमारा खूबसूरती से मार्गदर्शन करती हैं कि कैसे प्रतिबद्धता लेने से हमें अपने जीवन को बेहतर बनाने में मदद मिल सकती है। यदि हम उन गुणों को अपनाना चाहते हैं जो हमारे जीवन को सार्थक बनाएंगे तो हमें प्रयास भी करने होंगे। उदाहरण के लिए, दीदी हमेशा हमारे जीवन में विनम्रता के महत्व पर जोर देती हैं और यह हमें एक अच्छा जीवन जीने में कैसे मदद करती है। विनम्रता को आत्मसात करने का एक तरीका रेकी उपचार अभ्यास करना है। दूसरा तरीका यह है कि हम यह प्रतिबद्धता लें कि हम हर स्थिति में विनम्रता का परिचय देंगे। दीदी कहती हैं कि सबसे पहले विनम्र होने की प्रतिबद्धता लें और यदि आप स्वयं से विचलित होते हैं तो एक दंड लगाएं कि जब आप विनम्र नहीं हो पाएंगे, तो आप एक राशि अलग रख देंगे या आप एक निर्धारित अवधि के लिए अपनी सबसे पसंदीदा चीज़ को छोड़ देंगे। यह आपको अपनी प्रतिबद्धता पर खरा उतरने के लिए जागरुक करेगा। यदि हम सही और सकारात्मक शब्दों का वचन लेते हैं और हर बार जब आप चूकते हैं तो आप अपने ऊपर जुर्माना लगा सकते हैं। इससे आप अपने शब्दों के प्रयोग के प्रति जागरुक हो जायेंगे और धीरे-धीरे आप अच्छे और सकारात्मक शब्द ही बोलेंगे। बल्कि आप अच्छे और सकारात्मक शब्दों के लिए ही जाने जाएंगे।

एनआरएसपी का यह भी मानना है कि एक बार जब हम कोई प्रतिबद्धता ले लेते हैं तो प्रकृति भी आपका समर्थन करती है और उसे बनाए रखने में आपकी मदद करती है।

समय के साथ हमारी दीदी की प्रतिबद्धता बहुत सटीक है। एनआरएसपी टीम के रूप में हमने कई बार देखा है कि कुछ स्थितियों में प्रकृति खुद को मोड़ लेती है ताकि दीदी समय की प्रतिबद्धता को बनाए रख सकें। यह देखना अदभुत होता है, जब दीदी की फ्लाइट समय से पहले ही लैंड हो जाती है, मानो प्रकृति राह बना रही है कि दीदी ब्रह्म मुहूर्त की प्रार्थनाओं को तय समय पर करवाएं।

॥ 卐 ॥

दीदी के छाँव तले

जनवरी 2024 में राम मय यह सारा विश्व रहा । एन आर एस पी के बैनर तले पिछले वर्ष मुख से राम नाम जाप के साथ -साथ राम नाम लेखन की प्रक्रिया भी प्रारंभ की गई । इस प्रक्रिया ने बड़े ही चमत्कारिक परिणाम दिये क्योंकि राम नाम की महिमा और उस पर गुरु कृपा की महिमा अपरंपार है। प्रस्तुत हैं ऐसे ही कुछ चमत्कारिक शेयरिंग :-

दीदी के सानिध्य में शुरू हुई राम राम लिखने की साधना, जिसके अनेकों जैकपॉट मिल रहे हैं।

1.राम राम लिखने से पीठ का सालों पुराना दर्द ठीक हुआ ।

2. पहले सोने के लिए नींद की गोलियां लेनी पड़ती थी, अब राम राम लिखते लिखते ही मीठी नींद आ जाती है।

3. घर के सब लोग राम राम लिखने लगे हैं।

4. जैसी प्रार्थना की वैसी ही शादी हुई।

5. रोज़ सुबह शाम राम राम लिख रही हूं। पति के बिज़नेस में फिर से मुनाफ़ा हो रहा है और उन्हें अपनी गलतियों का भी एहसास हो रहा है।

6. बेटे का स्कूटी से बहुत बड़ा एक्सीडेंट हुआ, जिसमें स्कूटी ट्रक के नीचे आ कर चकना चूर हो गई जबकि बेटा, जो स्कूटी चला रहा था, वह अलग जा कर गिरा और उसे एक खंरोच भी नहीं आई।

7. पहले पूरे शरीर में दर्द रहता था, रोज़ दर्द की टैबलेट लेती थी। राम राम लिखना जब से शुरू किया है, तब से मैं पूर्ण रूप से स्वस्थ हूं।

8. बहन को स्वाद नहीं आता था, राम राम लिखने से मुंह का स्वाद फिर से लौट आया है।

9. किरायेदार मकान खाली नहीं कर रहे थे। राम राम लिखने से हो गया।

10.तीन दिन की प्रार्थना में ही रिश्ता पक्का हो गया है।

11.पैर नारायण हेल्प था। राम राम की साधना से ठीक हो गया।

12.जैकपॉट 12 साल की बेटी राम राम लिखने लगी है।

13.कार्मिक हीलिंग के बाद 10 गुना सेल बढ़ गई।

14.जिनसे प्यार करती थी उनका फोन आ गया, जो कि पिछले कई महीनों से नहीं आ रहा था।

प्रेरणादायक वृत्तांत

राम से बड़ा राम का नाम

राम नाम के बारे में 2 कहानियाँ हैं जो कि राम नाम के महत्व को दर्शाती हैं -

1) लंका जाते समय वानरों द्वारा राम नाम लिखे पत्थरों को समुद्र में डालना और उन पत्थरों का तैरते रहना। ऐसा कहते हैं कि श्री राम ने स्वयं एक पत्थर समुद्र में डाला तो वह डूब गया , परन्तु उन्हीं का नाम लिख कर जब वानरों ने समुद्र में पत्थर डाले तो वे डूबे नहीं बल्कि तैरते रहे। जो काम खुद श्री राम नहीं कर पाए वो काम उनके नाम ने कर दिया।

2) एक बार महर्षि विश्वामित्र हनुमान जी से नाराज़ हो गए क्योंकि उन्हें लगा कि हनुमान जी जानबूझ कर उनका अपमान कर रहे हैं। विश्वामित्र के शिकायत करने पर श्री राम ने हनुमान जी को मृत्युदंड की सजा सुनाई। उन्होंने ये निर्णय लिया के वे खुद हनुमान जी के ऊपर बाण चलाएंगे। जब उन्होंने हनुमान जी के ऊपर बाण चलाया (कथा के अनुसार - श्री राम ने ब्रह्मास्त्र चलाया) तो हनुमान जी लगातार 'राम– राम' का जप करते रहे। श्री राम का चलाया हुआ बाण हनुमान जी का कुछ भी नहीं बिगाड़ पाया। इसलिए भी कहते हैं कि राम से बड़ा राम का नाम।

इन कहानियों से परे एक महत्वपूर्ण बात है - साकार ब्रह्म और निराकार ब्रह्म। अयोध्या के श्री राम साकार ब्रह्म का स्वरुप हैं। और राम नाम निराकार ब्रह्म को याद करने का एक तरीका है। जिन लोगों की साकार ब्रह्म में निष्ठा है वे अयोध्या के राजा राम की पूजा करते हैं। जो लोग ब्रह्म को निराकार समझते हैं उनके लिए राम नाम भी एक साधन है ईश्वर को याद करने का।

राम के जीवन के कुछ चरित्र

सुग्रीव

रामायण में रावण ने सीता का हरण कर लिया था। इसके बाद सीता की खोज करते-करते श्रीराम और लक्ष्मण हनुमानजी से मिले। हनुमानजी ने श्रीराम की मुलाकात सुग्रीव से कराई। उस समय सुग्रीव को उसके बड़े भाई बाली ने राज्य से निकाल दिया था। उसकी पत्नी को भी अपने पास ही रख लिया था। श्रीराम और सुग्रीव ने एक-दूसरे की मदद करने का भरोसा दिलाया।

श्रीराम ने बाली को मार कर किष्किंधा का राजा सुग्रीव को बनाकर अपना वादा निभाया। सुग्रीव को बरसों बाद राज्य और स्त्री का संग मिला था। अब वो पूरी तरह से राज्य को भोगने और स्त्री सुख में लग गया। तब वर्षा ऋतु भी शुरू हो चुकी थी। भगवान श्रीराम और लक्ष्मण एक पर्वत पर गुफा में निवास कर रहे थे। वर्षा ऋतु निकल गई। आसमान साफ हो गया। श्रीराम को अब भी इंतजार था कि सुग्रीव आएंगे और सीता की खोज शुरू हो जाएगी। लेकिन सुग्रीव पूरी तरह से राग-रंग और उत्सव मनाने में डूबे हुए थे। सुग्रीव को ये याद भी नहीं रहा कि श्रीराम से किया वादा पूरा करना है। वह ये वादा भूल गए।

जब बहुत दिन बीत गए तो श्रीराम ने लक्ष्मण को सुग्रीव के पास भेजा। लक्ष्मण ने सुग्रीव पर क्रोध किया, तब उन्हें

।।卐।।

अहसास हुआ कि विलासिता में आकर उससे कितना बड़ा अपराध हो गया है। सुग्रीव को अपने वचन भूलने और विलासिता में भटकने के लिए सबके सामने शर्मिंदा होना पड़ा, माफी भी मांगनी पड़ी। इसके बाद सीता की खोज शुरू की गई।

रामायण की सीख

रामायण के इस प्रसंग की सीख है कि छोटी सी सफलता के बाद अगर हम कहीं ठहर जाते हैं, उत्सव मनाने लगते हैं तो मार्ग से भटकने का डर रहता है। कभी भी छोटी-छोटी सफलताओं को अपने ऊपर हावी ना होने दें। अगर हम छोटी या प्रारंभिक सफलताओं में उलझकर रह जाएंगे तो कभी बड़े लक्ष्यों को हासिल नहीं कर पाएंगे।

कुंभकरण

रामायण में रावण के भाई कुम्भकरण की भूमिका भी अद्भुत है। वो अपने विशाल शरीर और अपनी भूख से ज्यादा अपनी गहरी नींद के लिए जाना जाता था। माना जाता है कि राक्षस वंश का होने के बावजूद कुम्भकरण बुद्धिमान और बहादुर था। उसकी ताकत से देवराज इंद्र भी ईर्ष्या करते थे।एक बार रावण, कुम्भकरण और विभीषण एक साथ ब्रह्मदेव की तपस्या कर रहे थे। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्मा ने उनसे वर मांगने के लिए कहा। वहीं, दूसरी ओर इंद्र को डर था कि कुम्भकरण वरदान में कहीं स्वर्ग का सिंहासन न मांग लें।

इस बात से डरकर, इंद्र ने मां सरस्वती से कुम्भकरण के वरदान के बारे में अपनी चिंता व्यक्त की। मां सरस्वती ने कुम्भकरण की जीभ बांध दी, जिससे कुम्भकरण के मुख से इंद्रासन की जगह निंद्रासन निकल गया। इससे पहले कि कुम्भकरण को अपनी गलती का अहसास होता, ब्रह्मा जी तथास्तु बोल चुके थे।

रावण सब कुछ समझ गया था, उसने ब्रह्मा जी से उनके दिए हुए वरदान को वापस लेने के लिये कहा। ब्रह्मा जी ने एक शर्त के साथ उस वरदान को वापस लिया कि कुम्भकरण 6 माह सोएगा और 6 माह तक जागता रहेगा।

इस बात को रावण ने मान लिया। कहा जाता है कि जब राम-रावण का युद्ध हो रहा था, तब कुम्भकरण सो रहा था। उसे जगाने की कोशिश की गई, बहुत प्रयास करने के बाद ही वो नींद से जागा था।

नन्हीं गिलहरी

माता सीता का हरण होने के बाद, भगवान राम को लंका तक पहुंचने के लिए उनकी वानर सेना जंगल को लंका से जोड़ने के लिए समुद्र के ऊपर पुल बनाने के काम में लग जाती है। पुल बनाने के लिए पत्थर पर भगवान श्रीराम का नाम लिखकर पूरी सेना समुद्र में पत्थर डालती है। भगवान राम का नाम लिखे जाने की वजह से पत्थर समुद्र में डूबने के बजाय तैरने लगते हैं। यह सब देखकर सभी वानर काफी खुश होते हैं और तेजी से पुल बनाने के लिए पत्थर समुद्र में डालने लगते हैं। भगवान राम पुल बनाने के लिए अपनी सेना के उत्साह, समर्पण और जुनून को देखकर काफी खुश होते हैं। उस वक्त वहां एक गिलहरी भी थी, जो मुंह से कंकड़ उठाकर समुद्र में डाल रही थी। उसे ऐसा बार-बार करते हुए एक वानर देख रहा था।

कुछ देर बाद वानर गिलहरी को देखकर मजाक बनाता है। वानर कहता है, 'हे! गिलहरी तुम इतनी छोटी-सी हो, समुद्र से दूर रहो। कहीं ऐसा न हो कि तुम इन्हीं पत्थरों के नीचे दब जाओ।' यह सुनकर दूसरे वानर भी गिलहरी का मजाक बनाने लगते हैं। गिलहरी यह सब सुनकर बहुत दुःखी हो जाती है। भगवान राम भी दूर से यह सब होता देखते हैं। गिलहरी की नज़र जैसे ही भगवान राम पर पड़ती है, वो रोते- रोते भगवान राम के समीप पहुंच जाती है।

परेशान गिलहरी श्री राम से सभी वानरों की शिकायत करती है। तब भगवान राम खड़े होते हैं और वानर सेना को दिखाते हैं कि गिलहरी ने जिन कंकड़ों व छोटे पत्थरों को फेंका था, वो कैसे बड़े पत्थरों को एक दूसरे से जोड़ने का काम कर रहे हैं। भगवान राम कहते हैं, 'अगर गिलहरी इन कंकड़ों को नहीं डालती, तो तुम्हारे द्वारा फेंके गए सारे पत्थर इधर-उधर बिखरे रहते। ये गिलहरी के द्वारा फेंके गए पत्थर ही हैं, जो इन्हें आपस में जोड़े हुए हैं। पुल बनाने के लिए गिलहरी का योगदान भी वानर सेना के सदस्यों जैसा ही अमूल्य है।'

इतना सब कहकर भगवान राम बड़े ही प्यार से गिलहरी को अपने हाथों से उठाते हैं। फिर, गिलहरी के कार्य की सराहना करते हुए श्री राम उसकी पीठ पर बड़े ही प्यार से हाथ फेरने लगते हैं। भगवान के हाथ फेरते ही गिलहरी के छोटे-से शरीर पर उनकी उंगलियों के निशान बन जाते हैं। तब से ही माना जाता है कि गिलहरियों के शरीर पर मौजूद सफेद धारियां कुछ और नहीं, बल्कि भगवान राम की उंगलियों के निशान के रूप में मौजूद उनका आशीर्वाद है।

लक्ष्मण व उर्मिला

रामचंद्र जी को जब उनके पिता दशरथ राजपाठ सौंपने वाले थे, तभी उनकी दूसरी पत्नी कैकेयी को उनकी दासी मथंरा ने खूब भड़काया। मंथरा ने कहा कि राजा तो आपके बेटे भरत को बनना चाहिए। इसके बाद कैकेयी ने राजा दशरथ से दो वर मांगे, पहला भरत को गद्दी मिलनी चाहिए और दूसरा राम को 14 वर्ष तक वन में रहना होगा। राजा दशरथ को अपनी पत्नी के वर पूरे करने पड़े।

जब रामचंद्र जी वनवास के लिए अयोध्या से निकले, तब लक्ष्मण जी ने भी उनके साथ जाने की इच्छा जाहिर की।

लक्ष्मण के वन जाने की बात सुनकर उनकी पत्नी उर्मिला भी साथ जाने की जिद करने लगती है। तब लक्ष्मण अपनी पत्नी उर्मिला को समझाते हैं कि वह अपने बड़े भाई और मां समान भाभी सीता की सेवा करने के लिए जा रहे हैं। अगर तुम वनवास में साथ चलोगी, तो मैं ठीक तरह से सेवा नहीं कर पाऊंगा। लक्ष्मण के सेवा भाव को देखकर उर्मिला साथ जाने की जिद छोड़ देती है और महल में ही रुक जाती है।

वन में पहुंचकर लक्ष्मण, भगवान राम और सीता के लिए एक कुटिया बनाते हैं। जब राम और सीता कुटिया में विश्राम करते थे, तब लक्ष्मण बाहर पहरेदारी करते थे। वनवास के पहले दिन जब लक्ष्मण पहरेदारी कर रहे थे, तब उनके सामने निद्रा देवी प्रकट हुईं। लक्ष्मण ने निद्रा देवी से वरदान मांगा कि वह 14 साल तक निद्रा मुक्त रहना चाहते हैं। निद्रा देवी ने कहा कि तुम्हारे हिस्से की नींद किसी और को लेनी होगी। लक्ष्मण कहते हैं कि उनके हिस्से की नींद उनकी पत्नी को दे दें। इस कारण लक्ष्मण 14 साल तक नहीं सोए और उनकी पत्नी उर्मिला लगातार 14 वर्ष तक सोती रही।

रावण

रावण के बारे में हर कोई जानता है। वह राक्षस वंश का था और उसके द्वारा की गई गलतियों के कारण हर साल दशहरे के दिन रावण दहन भी किया जाता है। वैसे क्या आपको मालूम है कि महान विद्वान और पंडित होने के साथ-साथ रावण भगवान शिव का परम भक्त भी था।एक बार की बात है, रावण ने सोचा कि क्यों न अपने आराध्य शिव जी को प्रसन्न किया जाए। यह विचार कर वह तपस्या में लीन हो गया। बहुत समय तक तपस्या करने के बाद भी शिव जी प्रसन्न नहीं हुए, तो रावण ने अपना सिर काट कर शिव जी को अर्पण कर दिया। इसके बाद उसका सिर फिर से जुड़ गया। इसके बाद उसने फिर से अपना सिर काट दिया, लेकिन उसका सिर फिर से जुड़ गया। इस तरह एक-एक करके उसने दस बार अपना सिर काटा और हर बार उसका सिर जुड़ जाता।

रावण की इस तपस्या को देख कर शिव जी प्रसन्न हो गए और उन्होंने वरदान के साथ ही उसे दस सिर भी दे दिए। इस तरह रावण का नाम पड़ा दशानन पड़ा।

शबरी

शबरी भील जाति से ताल्लुक रखती थीं । इस जाति में शुभ कामों में पशुओं की बलि दी जाती थी। वह बचपन से ही भगवान राम की भक्त थीं।सुबह-शाम वह अपने राम जी के लिए पूजा-पाठ और व्रत रखतीं। जब उनका विवाह तय हुआ तब बकरों और भैसों को बलि के लिए लाया गया। इन पशुओं की जान बचाने के लिए उन्होंने विवाह ना करने का फैसला किया और घर से निकल गईं।

रास्ते में उन्हें एक आश्रम भी दिखा लेकिन अंदर जाने का साहस ना जुटा सकीं। उस वक्त वहां मतंग ऋषि आए और

शबरी से उनका परियच पूछा। काफी सोच विचार कर उन्होंने उसे आश्रम में आने की अनुमति दी। कुछ ही दिनों में वो अपनी राम भक्ति और अच्छे व्यवहार से सबकी प्रिय बन गईं। कई वर्ष उन्होंने मतंग ऋषि की पिता समान सेवा की। लेकिन एक दिन मतंग ऋषि के दुर्बल शरीर ने उनका साथ छोड़ दिया, किंतु उससे पहले वो शबरी को आशीर्वाद देकर गए कि उन्हें एक दिन उनके राम के दर्शन ज़रूर होंगे।

कई साल बीत गए। शबरी हर दिन रास्ते पर फूल बिछाती और भोग का इंतजाम करके रखती। इस आस में कि भगवान राम जरूर उन्हें दर्शन देंगे। और, एक दिन भगवान राम माता सीता की खोज में मतंग ऋषि के आश्रम पहुंचे। एक ऋषि ने राम जी को बिठाया और शबरी को आवाज दी। उन्होंने आवाज लगाते हुए कहा कि तुम जिन भगवान का दिन-रात पूजन करती हो वह खुद आश्रम पधारे हैं । आओ, और मन भरके राम जी की सेवा करो। भगवान राम को सामने पाकर वो उन्हें निहारती रहीं। कुछ देर बाद उन्हें स्मरण हुआ कि उन्होंने अपने भगवान को भोग नहीं लगाया। इसीलिए वह जगंल जाकर कंद-मूल और बेर लेकर वापस आश्रम लौटीं। कंद-मूल तो उन्होंने राम जी को दिए, लेकिन बेर खट्टे ना हो इस डर से उन्हें देने का साहस नहीं कर पाईं ।

अपने भगवान को मीठे बेर खिलाने के लिए उन्होंने उन्हें चखना शुरू किया।अच्छे और मीठे बेरों को राम जी को देने लगी और खट्टे बेरों को फेंकने लगी। भगवान राम शबरी की इस भक्ति को देख मोहित हो गए, लेकिन राम जी के भाई लक्ष्मण उन्हें देखकर अचंभित हुए कि भैया झूठे बेर क्यों खा रहे हैं।इसपर भगवान राम ने लक्ष्मण को समझाया कि यह झूठे बेर शबरी की भक्ति हैं और इसमें उनका प्रेम है।

तभी से शबरी और भगवान राम की यह कहानी 'शबरी के बेर' नाम से प्रसिद्ध हुई ।

राम भक्त कैसा हो

हित सों हित रति राम सों, रिपु सों बैर बिहाउ।
उदासीन सब सों सरल, तुलसी सहज सुभाउ॥

तुलसीदास जी कहते हैं कि राम भक्त को इतना सहृदय और क्षमावान होना चाहिए कि श्री राम में उसका प्रेम हो, मित्रों से मैत्री हो, शत्रुओं को भी क्षमा कर दे, किसी के साथ पक्षपात न करे तथा सबके साथ प्रेम एवम सरलता का व्यवहार करे।

।। 卐 ।।

Pavaan Vani

Dear Narayan Premiyo,
Narayan Narayan

22 January 2024, a historic day of which we all became a witness. We are blessed, we are fortunate to witness an era in which Lord Shri Ram regained his birthplace after 500 years.

The clan in which Shri Ram was born is famous for its distinct tradition.
Raghukul tradition always followed-

रघुकुल रीति सदा चली आई
प्राण जाये पर वचन न जाई।

(Even if life is lost, promises should be fulfilled.)

It is this tradition of the great clan, that gave India great, generous, and dignified kings. This tradition of Raghuvansh teaches an important secret of truly meaningful and successful life. If we stick to our commitments and diligently perform our duties then we can easily achieve growth, progress, success, and fame.

This commitment should be made to oneself. When we make a commitment to ourselves, no one is observing us, but our conscience is always witnessing us, we are constantly evaluating ourselves. In such a situation we are in competition with ourselves, and we are encouraged to give our best and success has to embrace us.

Today, when we have become witness to such a historical era in which Ram idol has been re-instated, then it becomes our duty to learn the virtue of commitment from Lord Ram and try to implement it in life.

Rest all good,

R. Modi

CO-EDITOR
Deepti Shukla 09869076902

EDITORIAL TEAM
Vidya Shastry 09821327562
Mona Rauka 09821502064

Main Office
Narayan Bhawan
Topiwala Compound, station road,
Goregaon (West), Mumbai.

Editorial Office
Shreyas Bunglow No 70/74 Near Mangal Murti Hospital, Gorai link Road, Borivali (W) Mumbai -92.

Regional Office

AHMEDABAD	JAIWINI SHAH	9712945552
AKOLA	SHOBHA AGRAWAL	9423102461
AKOLA	RIYA AGARWAL	9075322783
AMRAVATI	TARULATA AGRAWAL	9422855590
AURANGABAD	MADHURI DHANUKA	7040666999
BANGALORE	KANISHKA PODDAR	7045724921
BANGALORE	SHUBHANGI AGRAWAL	9327784837
BANGALORE	SHUBHANGI AGRAWAL	9341402211
BASTI	POONAM GADIA	9839582411
BIHAR	POONAM DUDHANI	9431160611
BHILWADA	REKHA CHOUDHARY	8947036241
BHOPAL	RENU GATTANI	9826377979
CHENNAI	NIRMALA CHOUDHARY	9380111170
DELHI (NOIDA)	TARUN CHANDAK	9560338327
DELHI(NOIDA)	MEGHA GUPTA	9968696600
DELHI (W)	RENU VIJ	9899277422
DHULIA	RENU BHATWAL	878571680
GONDIYA	RADHIKA AGRAWAL	9326811588
GOHATI	SARLA LAHOTI	9435042637
HYDERABAD	SNEHALATA KEDIA	9247819681
INDORE	DHANSHREE SHIRALKAR	9324799502
JALANA	RAJNI AGRAWAL	8888882666
JALGAON	KALA AGARWAL	9325038277
JAIPUR	PREETI SHARMA	9461046537
JAIPUR	SUNITA SHARMA	8949357310
JHUNJHNU	PUSHPA DEVI TIBEREWAL	9694966254
ICHAKARANJI	JAY PRAKASH GOENKA	9422043578
KOLHAPUR	RADHIKA KUMTHEKAR	9518980632
KOLKATTA	SWETA KEDIA	9831543533
KANPUR	NEELAM AGARWAL	9956359597
LATUR	JYOTI BHUTADA	9657656991
MALEGAON	REKHA GARODIA	9595659042
MALEGAON	AARTI CHOUDHARY	9673519641
MALEGAON	AARTI DI	9518995867
MORBI	KALPANA CHOUARDIA	8469927279
NAGPUR	SUDHA AGRAWAL	9373101818
NANDED	CHANDA KABRA	9422415436
NAWALGARH	MAMTA SINGRODIA	9460844144
NASIK	SUNITA AGARWAL	9892344435
PUNE	ABHA CHOUDHARY	9373161261
PATNA	ARBIND KUMAR	9422126725
PURULIYA	MRIDU RATHI	9434012619
PARATWADA	RAKHI MANISH AGRAWAL	9763263911
RAIPUR	ADITI AGRAWAL	7898588999
RANCHI	ANAND CHOUDHARY	9431115477
SURAT	RANJANA AGARWAL	9328199171
Sangli	Hema Mantri	9403571677
SIKAR (RAJASTHAN)	SUSHMA AGARWAL	9320066700
SHRI GANGANAGAR	MADHU TRIVEDI	9468881560
SATARA	NEELAM KDAM	9923557133
SHOLAPUR	SUVARNA BALDEVA	9561414443
SILIGURI	AKANKSHA MUNDHRA	9564025556
TATA NAGAR	UMA ARAWAL	9642556770
ROURKELA	UMA ARAWAL	9776890000
UDAYPUR	GUNWATI GOYAL	9223563020
UBLI	PALLAVI MALANI	9901382572
VARANASI	ANITA BHALOTIA	9918388543
VIJAYWADA	KIRAN JHAWAR	9703933740
VARDHA	RUPA SINGHANIA	9833538222
VISHAKAPATTNAM	MANJU GUPTA	9848936660

INTERNATIONAL CENTRE NAME AND NUMBER

AUSTRALIA	RANJANA MODI	61470045681
DUBAI	VIMLA PODDAR	+971528371106
KATHMANDU	RICHA KEDIA	+977985-1132261
SINGAPORE	POOJA GUPTA	+6591454445
SHRJAH-UAE	SHILPA MANJARE	+971501752655
BANGKOK	GAYATRI AGARWAL	+66952479920
VIRATNAGAR	MANJU AGARWAL	+977980-2792005
VIRATNAGAR	VANDANA GOYAL	+977984-2377821

Editorial

Dear Readers,

Narayan Narayan

The whole world echoing the slogan of Jai Siya Ram, Jai Siya Ram, and in such an environment Ramlala being established in his birthplace, the consecration of Lord Shri Ram's Idol, the golden opportunity of Team Satyug visiting Ayodhya Dham! Couldn't believe that Team Satyug is in Ayodhya Dham with Raj Didi.

Every cell of the body was filled with a feeling of heavenly bliss. Heard and understood many qualities of Ramlala in detail in the presence of Raj Didi.

One cannot become like Shri Ram, but one of the many qualities of his personality, that is commitment. can be easily imbibed in life.

So, Team Satyug decided to discuss the virtue of commitment with its thoughtful readers. Team Satyug got busy in manifesting this thought and finally this issue is in your hands.

With good wish that we all will continue to make our lives successful and meaningful by sticking to our commitments.

Yours own,
Sandhya Gupta

To get
important message and information from
NRSP Please Register yourself on 08369501979
Please Save this no. in your contact list so that you can get all official broadcast from NRSP

we are on net

narayanreikisatsangparivar@narayanreiki

Publisher **Narayan Reiki Satsang Parivar,**
Printer - **Shrirang Printers Pvt. Ltd.,** Mumbai.
Call : 022-67847777

॥ 卐 ॥

Call of Satyug

Making a commitment and sticking to the commitment, especially in a situation when it is the question of your life and honor, instead not caring about your life, honor, and dignity for the sake of that commitment, is that which makes you a Ram.

What is Ram? Let us understand -

Ram Ram

'Ra' means light and 'Ma' means 'the light within me'. The one who shines within us is Ram, the one who shines in every particle of the universe is Ram.

'Ram' is not a personality but is the supreme power that encompasses the entire universe and is present everywhere from the beginning till the end. This power is within me, it is within you, it is within everyone, that is, there is a part of that Supreme Lord within all of us which we can enhance through good deeds, thoughts, speech, and behavior. As soon as we chant Ram, our heart connects its strings not to any person but to that formless power, without any extra effort. The inhale and exhale of our breath is Ram. Do you understand how? Through Narayan Reiki. When we say Ra, our mouth opens, and we expel the negativity (carbon dioxide oxide) and inhale the positivity (oxygen). When we close our mouth to say Ma, the positivity (oxygen) that enters us starts flowing into every cell of the body and this body just like a machine starts functioning.

The easiest way to attain salvation in Kaliyuga is the name of Ram.

Goswami Tulsidas ji, the author of Ramcharitmanas, says that if you keep the pearl of Ram's name on your tongue, then both your inside and outside will be illuminated. Narayan Reiki Satsang Parivar also accepts this. The miracles that happened after writing in our Ram Naam writing book coincide with Tulsidas ji.

Ram, the seventh incarnation of Lord Vishnu, born in Treta Yuga, unveils the qualities of that supreme power, truth, knowledge, beauty, power, and bliss. Ram is both Nar(human) and Narayan, human as well as divine, both the doer and the created, Ram is the creator as well as the creation, Sagun Saakar as well as Nirgun formless. The path is also Ram, and the goal is also Ram.

Ram is the proof of a normal human being becoming the best human (Purushottam). Ram's character is such a tale of dignity that by imagining it in any situation, the most dignified solution to that situation can be found.

Raja Ram is the bearer of that tradition of Raghukul where,

रघुकुलरीतिसदाचलीआई
प्राणजायेपरवचननजाई।

'Raghukul tradition says that even if life is lost, promises should be fulfilled.'

This very announcement forces a father (Dasaratha) to risk his life and send his beloved son (Ram) into exile.

This is a call of promise for which prince Ram goes into exile for 14 years. This very announcement inspires Lakshman to wander from forest to forest with his elder brother Ram. It is this declaration of commitment that inspires Bharat to upkeep the throne in the absence of King Ram by keeping the khadau (Slippers) of Ram Ji on the throne for 14 years. This is a promise made by a wife (Urmila) to her husband (Lakshman) at the time of Saptapadi that she will support her husband on every step, every moment so that her husband could remain awake and serve his brother and sister-in-law, the beautiful princess Urmila slept for 14 years. This became possible only because of Raghukul's tradition of sacrificing one's life but not sacrificing one's promise.

When Ram returned from exile, his subjects welcomed him by celebrating Diwali, seated him on the throne with tearful eyes and accepted him as a ruler. It was possible because of this clarion call.

We can easily understand from the character of Hanuman ji how high-level commitment takes the form of devotion.

The priority of devotion towards Ram is humility. The first step of Ram's devotion is being calm. Hanuman ji enters Ravana's Lanka very peacefully. Laughing calmly, he answers questions in Ravana's court and even when provoked, calmly burns Lanka and chants Jai Ram.

The first proof of Ram Siddhi is sublimity. That's why Ram does not become a war cry but becomes the rhythm of spirituality, that's why after saying Ram, the lips are closed, as if saying that there is nothing more left to say other than Ram - Ram.

Ram is an example of one word becoming a mantra. Ram's character is shaped by maintaining equanimity in both situations, victory, and defeat. Ram is not great because he knows how to be patient in the face of defeat. He is great because he is patient even in the moments of victory. He becomes Ram who remains calm in

adverse circumstances and becomes Ravana who loses temper when expectations are not met.

Ram's character is about putting dignity before victory and defeat. This is the reason why Ram destroys the deceit woven by Manthara with the power of his dignity. If seen from a general point of view, Ram's conduct is unexpected. Manthara could not have imagined that when Kaikeyi would ask for a boon of exile for Ram, then Ram would so easily become ready to reside in the forest, but due to the way Ram behaved in front of the vow bound Dasaratha, Kaikeyi's victory turned into defeat instantly. If Ram had fought with Dashrath for his rights, then perhaps the behavior of Bharat who returned from his maternal home could have changed. He could have accepted Manthara's suggestions and mother Kaikeyi's stubbornness as justified. But Ram's dignity eliminated the possibility of this situation. Ram has the skill to cut the roots of doubt. By staying within the bounds of decorum and with unimaginable conduct, Ram makes every impossible possible. He creates his own path. Such great men create their own morality, and the morality created by them is so simple that it becomes acceptable in every class, at every time and in every era. Ram's morality is timeless. Ram's morality transcends the boundaries of time; hence Ram is timeless.

The devotee of Ram is also prudent and humble and never violates decorum. Even after insults like burning the tail, Hanuman was so prudent that when he set Lanka on fire, not even a spark came in Ashok Vatika.

Let us learn from Ram and make life successful and meaningful by awakening the Ram residing within us. This very unique poem tells how to attain Ram:-

(Ram was found in the couplets of Tulsidas.
Even now Ram can be found in following them.

Ram was found in fulfillment of Dasarath's promise.
Even now Ram can be found in following father's order.

Ram can be found in Kaushalya's love.
Even now Ram can be found when you serve your parents.

Ram was in Sita's purity.
Even now we can find Ram by keeping our mind pure.

Ram was in Lakshman's service.
Even now Ram can be found in serving the people.

Ram resided in the chest of Bajrang Bali.
Even now Ram can be found in devotion of Ram.

Ram was found in Anusuiya's humanity.
Even now Ram can be found in following humanity.

Ram was found by Shabari when she fed tasted berries to him.
Even now Ram can be found in feeding the hungry.

Ram was found in the pain of injured Jatayu.
Even now Ram can be found in taking care of the poor and destitute.

Ram was found in the dignity of Ayodhya.
Even now Ram can be found in keeping decorum.

Ram was found in the voice of Kagabhushundi.
Even now Ram can be found in chanting the name of Ram.

हितसों हित,रतिरामसों, रिपुसोंबैरबिहाउ।
उदासीनसबसोंसरल, तुलसीसहजसुभाउ॥

Tulsidas ji says that a devotee of Ram should have such an emotion that he should have love for Shri Ram, has friendship with his friends, gives up enmity with his enemies, does not show favoritism towards anyone and treats everyone with love and simplicity.

॥ 卐 ॥

Wisdom Box
(Glimpses of Satsang)

Whenever we help others, it never goes in vain. It is always fruitful.

Shri Ram Lalji Joshi writes – "I have served in my life span without any hope, without any selfishness and it gave me amazing results. This service would be so fantastic, I didn't even imagine.

Shri Ram Lalji Joshi writes that this is the incident when he used to do Compounders job at the government hospital in Jaipur. Ram Lalji Joshi was the owner of a land in the village. a powerful and rich person had registered a case against him.

The opposite party was rich and strong. The case date kept changing, Ram Lalji got disturbed, but the stress did not affect his work because he neither had money nor force though the land was his.

Ram Lal ji Joshi further writes that he was Compounder, in a hospital ward there was an elderly person in that Ward, he was ill since many days. His son would bring medicines and meals during the evening, stay overnight, and leave early in the morning. Ram Lalji found that he used to travel from Sawai Madhopur It took two hours of Rail journey every day and he was “Justic Magistrate”.

He had Duty in court throughout the day, in the evening, he would come to his ailing father in Jaipur, then again in the morning, go to Sawai Madhopur. One day Ram Lalji told him that he must give duty in the court full day and evening he was travelling daily to visit his father. It must be very hectic for him.

Ram Lalji suggested the son, that he should come only on weekends rest of the days Ram Lalji would take care of his father. Secondly Doctors used to visit the patients after the Magistrate would leave for Jaipur and prescribe medicines to his father, so his father had to stay without any medicines for 8- 10 hrs. till the son would come and get medicines.

Ram Lalji convinced the Magistrate that he would take good care of his father.

Ram Lalji's routine changed he would leave his home little early, buy fresh fruits, and go to the hospital and give fruits to the Magistrate's father. He arranged a peon to give bath to the father. He arranged a washerman to. wash his clothes. Ram Lalji would get fresh meals for the father from the hospital canteen.

His selfless service to The Magistrate's father was fruitful. The person who was admitted in the hospital since several months became completely healthy in 27

days. When that elderly person was discharged from the hospital, he wanted to pay Ram Lalji a good amount as a gratitude. Ram Lalji refused and said that he simply did his duty. His son (The judicial Magistrate) also tried to give him some amount. Ram Lalji refused and said, “I have completed the promise that I had made to you, I will not take money from you.

Shri Ram Lalji writes that when they were leaving, The Magistrate told Ram Lalji, “You did serve my father a lot. My father got well because of you. If you ever require help from me, please tell me. Ram Lalji replied that Virat Nagar is a small village near Jaipur he lives there. Sawai Madhopur does not fall in his way. Ram Lalji told the Magistrate to meet him if he ever visited Virat Nagar again.

If you want good behavior from others, start behaving well with people around you.

Raj Didi narrated a true-life incident in one of the sessions, that many people give Sewa at our Centre. One of the volunteers, a 60-year-old woman told Didi that her son who is highly educated he is a MBA and CA as well. The son was working in a multinational company. On a high position and had excellent package. His boss used to trouble him a lot.

Though the volunteer's son would complete his work timely. The Boss would give him more and more work. The official time is till

8:00 pm., her son had been working for 4 years, but the boss would not leave him before 11pm. The son was sincere he would never tire from work, but still the boss was never satisfied. The son was very upset and the lady requested Didi to guide her with some prayer so that the son may get some relief from the extra office work and his relationship with his boss become harmonious.

Didi guided the mother with prayers.

The mother did not get the desired result. She approached Didi to seek guidance again. Raj Didi told her that since her son was so highly educated, he should change the job. The lady said his package was excellent, he cannot leave the job. Raj Didi told her to send her son for counseling.

Didi enquired about the son's behavior from the mother. The mother ..told Raj Didi that when he comes home from the office, he just removes shoes anywhere in the room, put his bag at any random place, puts his glasses, the laptop, his wallet just anywhere and while going to office in the morning, he shouts and

screams as he could not find his things which he himself had randomly put in the house after returning from the office. He always leaves for office in bad mood. The family members remain calm so that he goes peacefully. When the son came to meet Didi, Didi enquired what time he leaves for his office? He replied that he leaves at 9:00am Didi asked what time he wakes up? He said around 8.30 am. Didi asked how he gets ready in half an hour? He replied his mother keeps everything ready, if he feels he eats breakfast otherwise just leaves without eating anything.

Didi knew his nature very well and she slowly convinced him to finish his work at home before leaving for the office.

Didi told him since he leaves all his work at home, like making his bed and other such things on his mother he must do extra work in office.

Didi asked him to do all his work in the house properly so that he did not have to do extra work in the office. He was not ready to believe it ... Didi asked him to try it for eight days. If he gets the result, he can continue with the practice otherwise he can do as per his wish. Next day his mother told Didi that her son woke up an hour early, made his bed, ate breakfast happily. Kept all his things properly before leaving for the office. On the third day, the boy called up Didi at 8:00 pm. At night he said there was a miracle. He has been working for 4 years in the company, for the first time that day, his boss came smiling to his cabin at 8:00 pm and asked him to leave for the day.

Express love

The person to whom you say' I love you 'treat the person with love so that love is reflected in your behavior towards him. It is certain that the present day will not come again so live each moment honestly and utilize each moment.

Raj Didi further said that we pray to Narayan that since we are moving towards meaningful life then what - things we want to move ahead on this path.

We want love, respect, faith, care, name, fame, money appreciation.

Shanti Kalash Meditation

Now since we moved towards meaningful life, we must give our 100% in all our work. Raj Didi guided the satsangis for “Shanti Kalash Meditation”.

Raj Didi said – Our universe is filled with invisible and supernatural powers.

"Raj Didi said that during meditation she got connected with a "Shanti kalash", how to connect with shanti kalash and fill peace within us.

Didi said that peace is priority for everyone. ""peace of mind"". " "People who visit

Didi for counseling express desire to achieve, ""Peace of Mind". People seek Didi's advice to achieve “Peace of Mind”. Raj Didi said that if we become calm, peace will prevail in our house.

Raj Didi guided the satsangis to Close eyes and listen carefully. First say “Narayan Help. Didi explained “We asked Narayan for help so that the invisible “Shanti kalash” in the universe should contact us, Narayan granted our wish and connected us with that “Shanti kalash”. Now we requested Narayan, that that “Shanti kalash” be placed on our head, the crown chakra and from that rays of peace enter our body. For that do Jaap 14 times “Hey Narayan thank you, there is infinite peace within us, infinite peace within us, infinite peace within us.”

Everyone should say this together.

"There is infinite peace within us."

Fourteen times and feel the rays of peace reaching every cell of our body.

Narayan Dhanyawaadhai.

Narayan divine blessings with Narayan shakti to MaheshKumarHedaon his birthday (9th January) for a seven-star life and success and happiness in all spheres.

॥ 卐 ॥

Youth Desk

A pledge which you take with yourself and incessantly work on it, is defined as Commitment.

To begin with, one must make some basic commitments like following a virtuous path, a planned timetable and being sincere towards your duties.

There are a few unsaid commitments you make at home, workplace, and society.

Even if you climb the ladder of success and become a great achiever never ever forget those commitments. Making new commitments is good but forgetting old ones will not only leave you with guilt but also create a wrong image in other's eyes.

Keep in mind that your commitments should not be with the intention of selfish interests, to demean someone, instead they should be sincerely done keeping in mind the wellbeing of self and others.

The success of a person is directly proportional to the commitments a person can make and manifest them with strong will and determination.

Most recent example of commitment is the BJP government's commitment of building a Ram temple in Ayodhya.

Under the strong leadership of our Prime Minister, India has accomplished a task which was pending since centuries.

Our Prime minister has exhibited at various occasions that the commitments he makes, he fulfills them too with grit and determination.

Today's youth need to take commitments seriously, be it marital relationship, work ethics, personality development or duties as a responsible citizen of India.

Honesty, loyalty, fidelity, and trust play a very important role among couples. It is an unsaid commitment that both the partners should essentially take before tying the knot.

In Job and business too, sincerity, loyalty and Honesty towards your organization is an important commitment.

To keep good mental and physical health, one needs to have a **commitment of practicing meditation and doing some sort of exercise**.

As for society, your commitment to become an instrument in ushering Satyug is of prime importance. Make sure that every youth not only in India but the entire world becomes positive in thoughts, words and deeds thereby leading a seven-star life.

Children's Desk

The month of January is dedicated to the commitment and resolutions we take, we keep. We try our best to keep it also and are successful most of the time.

Team Satyug decided t to elaborate the views of NRSP on Commitments.

NRSP believes and prophesizes that whenever we make a commitment, it is our moral responsibility that we keep it.

Art Turock says there is a difference between interest and commitment. When you are interested in doing something, you will do it only when time permits but when you are committed to something you accept no excuses only results.

This NRSP founder displays when she conducts her Brahmamuhurat Sadhana with her team. Whether in a session in India or abroad, whether in a family vacation, Didi herself and her team joins the sadhana of 4.30am. There are times during travel when Didi reaches her destination in the early morning hours but the Brahmamuhurat sadhana always is her priority because it is her commitment to all the satsangis.

Didi guides us beautifully how taking a commitment can help us mould our life better. If we want to imbibe the qualities which will make our life meaningful, then we need to take in the efforts too. For example, Didi always emphasizes the importance of humility in our life and how it supports us to lead a good life. One way to imbibe humility is to do the reiki healing practice. Another way is to take the commitment that we will exhibit humility in every situation. Didi says take the commitment to be humble and if you deviate, self-impose a punishment that when you are not courteous, you will set aside an amount or you will forgo something you like most for a set period. This will make you aware to live up to your commitment. If we take the commitment of right and positive words and every time you deviate you will set aside an amount to donate. This will make you aware to the use of your words and slowly you will speak only good and positive words. Rather you will be known for only good and positive words.

NRSP also believes that once we make a commitment, nature supports you and helps you to keep it up.

Our Didi's commitment with time is very precise. So many a times as an NRSP team we have encountered that in a certain situations' nature bends itself so that Didi can keep up the time commitment.

Let us all be committed towards creating a brighter better future for all of us with NRSP virtues and values.

||नारायण नारायण||

॥ 卐 ॥

Under The Guidance of Rajdidi

January 2024, is a world filled with Ram Ram energy.

Last year, under the banner of NRSP, along with chanting the name of Ram, the process of writing the name of Ram was also started. This method gave very miraculous results because the glory of the name of Ram and the glory of Guru's grace on it is immeasurable. Here are some such miraculous sharing: -

The practice of writing Ram Ram started under the guidance of Didi, for which many jackpots are being received.

1. Years old back pain got cured by writing Ram Ram.
2. Earlier one had to take sleeping pills to sleep, now one gets sweet sleep just by chanting Ram Ram.
3. Everyone in the house have started writing Ram Ram.
4. The marriage took place on praying in this manner.
5. I am writing Ram Ram every morning and evening. Husband's business is becoming profitable again and she is also realizing her mistakes.
6. The son had a major accident with his scooter, in which the scooter came under the truck and was crushed to pieces, while the son, who was driving the scooter, fell far away and did not even get a scratch.
7. Earlier, there was pain in the whole body, I used to take pain tablets daily. Ever since I started writing Ram Ram, I am completely healthy.
8. Had no taste, writing Ram Ram has brought back the taste in my mouth again.
9. The tenants were not vacating the house. It's became possible by writing Ram Ram.
10. The relationship has been confirmed in just three days of prayer.
11. Foot was Narayan was help, was cured by the meditation of Ram.
12. Jackpot 12-year-old daughter has started writing Ram Ram.
13. After karmic healing the sale increased 10 times.
14. A call came from someone she loved, which was not happening for the last several months.

Narayan divine blessings with Narayan shakti to Banwarilal Taparia on his birthday (29th January) for a seven-star life and success and happiness in all spheres.

||नारायण नारायण||

The name of Ram is bigger than Rama himself.

There are 2 stories about the name Ram which show the importance of the name Ram -

1) While going to Lanka, the monkeys threw stones with Ram's name written on them into the sea and those stones kept floating. It is said that when Shri Ram himself threw a stone in the sea, it drowned, but when the monkeys threw stones in the sea after writing his name, they did not drown but kept floating. The work which Shri Ram himself could not do was done by his name.

2) Once Maharishi Vishwamitra became angry with Hanuman ji because he felt that Hanuman ji was deliberately insulting him. When Vishwamitra complained, Shri Ram sentenced Hanuman to death. He decided that he himself would shoot arrows at Hanuman ji. When he shot the arrow at Hanuman ji (according to the story - Shri Ram fired Brahmastra), Hanuman ji kept chanting "Ram-Ram" continuously. The arrow shot by Shri Ram could not do any harm to Hanuman ji. That is why it is also said that the name of Ram is bigger than Ram.

Beyond these stories there is an important thing – Real Brahma and formless Brahma. Shri Ram of Ayodhya is the embodiment of Saakar Brahma. And the name Ram is a way of remembering the formless Brahma. Those who have faith in Sakaar Brahma worship King Ram of Ayodhya. For those who consider Brahma to be formless, the name of Ram is also a means to remember God.

Sugreev

In Ramayana, Ravana had abducted Sita. After this, while searching for Sita, Shri Ram and Lakshman met Hanuman. Hanuman made Shri Ram meet Sugriva. At that time Sugriva was expelled from the kingdom by his elder brother Bali. He had also kept his brother's wife with him. Shriram and Sugriva assured to help each other.

Shri Ram kept his promise by killing Bali and making Sugriva the king of Kishkindha. Sugriva got the company of a kingdom and his wife after many years. Now he was completely engrossed in enjoying the kingdom and the pleasures of women. By then the rainy season had also started. Lord Shri Ram and Lakshman were residing in a cave on a mountain. The rainy season too passed. The sky cleared.

Shri Ram was still waiting for Sugriva to come and initiate the search of Sita. But Sugriva was completely engrossed in music and celebration. Sugriva did not even remember that he had to fulfill the promise made to Shri Ram. He forgot this promise.

When many days passed, Shri Ram sent Lakshman to Sugriva. Lakshman got angry at Sugriva, then he realized what a big crime he had committed by indulging in pleasures. Sugriva was humiliated in front of everyone for forgetting his words and had to apologize. After this the search for Sita was started.

Lessons from Ramayana

The lesson of this episode of Ramayana is that if after a small success we stop somewhere and start celebrating, then there is a fear of going astray from the path. Never let small successes overwhelm you. If we remain entangled in small or initial successes, we will never be able to achieve big goals.

Kumbhakarna

The role of Ravana's brother Kumbh Karan in Ramayana is also amazing. He was known more for his huge body and his deep sleep than his appetite. It is believed that despite being of demon lineage, Kumbhakaran was intelligent and brave. Even Devraj Indra was jealous of his strength. Once Ravana, Kumbhakaran and Vibhishana were doing penance to appease Brahmadev together. Pleased with his penance, Brahma asked him to put his request for a boon. On the other hand, Indra was afraid that Kumbhakaran might ask for the throne of heaven in return for the boon.

Fearing this, Indra expressed his concern to Mother Saraswati about the boon of Kumbhakaran. Mother Saraswati tied Kumbh Karan's tongue, due to which Nidrasana came out of Kumbhkaran's mouth instead of Indrasana. Before Kumbhakaran could realize his mistake, Brahma had already said Amen.

Ravana understood everything, he asked Brahma to take back the boon given by him. Brahma took back that boon with a condition that Kumbhakaran would sleep for 6 months and remain awake for 6 months.

Ravana accepted this. It is said that when the war between Ram and Ravana was going on, Kumbhakaran was sleeping. An attempt was made to wake him up, but only after many efforts he woke up from sleep.

The little squirrel

After the abduction of Mother Sita, Lord Rama initiates the building of a bridge over the sea to connect the forest to Lanka with his monkey army to reach Lanka. To build a bridge, the entire army throws stones into the sea after writing the name of Lord Shri Ram on the stones. Due to the name of Lord Ram being written, the stones start floating instead of sinking in the sea. Seeing all this, all the monkeys become very happy and quickly start throwing stones into the sea to build a bridge. Lord Ram is very happy to see the enthusiasm, dedication, and passion of his army to build the bridge. At that time there was also a squirrel observing this act, so it started picking pebbles in its mouth and began throwing them in the river. A monkey was watching it do this again and again.

After some time, the monkey makes fun of the squirrel. The monkey says, “Hey! Squirrel, you are so small, stay away from the sea. Lest you get buried under these stones.” Hearing this, other monkeys also start making fun of the squirrel. The squirrel becomes very sad after hearing all this. Lord Ram also sees all this happening from a distance. As soon as the squirrel's eyes fall on Lord Ram, it comes near Lord Ram crying.

The distressed squirrel complains to Shri Ram about all the monkeys. Then Lord Ram stands up and shows the monkey army how the pebbles and small stones thrown by the squirrel are working to connect the big stones to each other. Lord Rama says, “If the squirrel had not thrown these pebbles, all the stones thrown by you would have remained scattered here and there. Actually, the stones thrown by the squirrel are holding big stones together. The contribution of the squirrel in building the bridge is as invaluable as that of the members of the monkey army.”

Having said all this, Lord Ram lovingly picks up the squirrel with his hands. Then, appreciating the squirrel's work, Shri Ram starts caressing its back lovingly. As soon as God's hands move, his fingerprints are formed on the small body of the squirrel. Since then, it is believed that the white stripes present on the body of squirrels are nothing but the blessings of Lord Rama in the form of his fingerprints.

Manthara

When his father Dasharatha was about to hand over the throne to Ramchandra ji, his second wife Kaikeyi was provoked by his maid Manthara. Manthara said that your son Bharat should become the king. After this, Kaikeyi asked for two boons from King Dasharatha, firstly Bharat should get the throne and secondly Ram should live in the forest for 14 years. King Dasharatha had to fulfill his wife's wishes.

When Ramchandra ji left Ayodhya for exile, Lakshman ji also expressed his desire to go with him. Hearing about Laxman going to the forest, his wife Urmila also starts insisting on going with him. Lakshman then explains to his wife Urmila that he is going to serve his elder brother and mother-like sister-in-law, Sita. If you accompany me into exile, I will not be able to serve properly. Seeing Laxman's service spirit, Urmila gives up her insistence on going along and stays in the palace itself.

After reaching the forest, Lakshmana builds a hut for Lord Rama and Sita. When Ram and Sita rested in the hut, Lakshman stood guard outside. On the first day of exile, when Lakshman was on guard duty, Nidra Devi appeared before him. Lakshman asked for a boon from Goddess Nidra that he wanted to remain sleep-free for 14 years. Nidra Devi said that someone else will have to take your share of sleep. Laxman says to give his share of sleep to his wife. Due to this, Laxman did not sleep for 14 years, and his wife Urmila continued to sleep for 14 years.

Ravana

Everyone knows about Ravana. He belonged to the demon dynasty and due to the mistakes committed by him, Ravana Dahan is also performed every year on the day of Dussehra. Do you know that along with being a great scholar and scholar, Ravana was also a great devotee of Lord Shiva. Once upon a time, Ravana thought that why not please his beloved Lord Shiva. Thinking this, he became engrossed in penance. Even after doing penance for a long time, Lord Shiva was not pleased, so Ravana cut off his head and offered it to Lord Shiva. After this his head was reattached. After this he again cut off his head, but his head was reattached. In this way, he cut his head ten times one by one and every time his head would grow back.

Seeing this penance of Ravana, Lord Shiva became pleased and along with the boon, he also gave him ten heads. This is how Ravana got the name Dashanan.

Shabari

Shabari belonged to the Bhil caste. In this caste, animals were sacrificed for auspicious works. She was a devotee of Lord Ram since childhood. She used to worship and fast for her Lord Ram in the morning and evening. When their marriage was fixed, goats and buffaloes were brought for sacrifice. To save the lives of these animals, she decided not to marry and left the house.

She also saw an ashram on the way but could not muster the courage to go inside. At that time Matang Rishi came there and asked about Shabari. After much consideration, he allowed her to come to the ashram. Within a few days, she became everyone's favorite due to her devotion to Ram and good behavior. For many years he served Matang Rishi like a father. But one day Matang Rishi's weak body left him. But before that, he blessed Shabari that one day she would have the darshan of his Lord Rama.

Many years passed. Every day Shabari used to spread flowers on the road and planned for food. In the hope that Lord Ram will give darshan. And, one day Lord Ram reached the ashram of Matang Rishi in search of Mother Sita. A sage made Ram ji sit and called Shabari. He raised his voice and said that the God whom you worship day and night has himself come to the ashram. Come and serve Ram ji with all your heart. Seeing Lord Ram in front of her, she kept looking at him. After some time, she remembered that she had not offered food to her God. She went to the forest and returned to the ashram with the tubers, roots, and berries. She wanted to give the tubers, roots, and berries to Ram ji, but did not have the courage to give them to him due to the fear that they might be sour.

To feed the sweet berries to her Lord, she started tasting them. She started giving good and sweet berries to Ram ji and started throwing away the sour ones. Lord Ram was fascinated by the devotion of Shabari. But Ram ji's brother Lakshman was surprised to see him as to why he was eating ostensible berries. On this, Lord Ram explained to Lakshman that these eaten berries exhibit the devotion of Shabari, and he had affection for her.

Since then, this story of Shabari and Lord Ram became famous by the name 'Shabari Ke Ber'.

GOLDEN SIX

1) Prayer -Thank you Narayan for always being with us because of which today is the best day of our life filled with abundance of love, respect, faith care, appreciation, good news and jackpots . Thank you Narayan, for blessing us with infinite peace and energy. Narayan, Thank you for blessing us with abundant wealth which we utilize. We are lucky and blessed. With your blessings, Narayan, every person, place, thing, situation, circumstances, environment, wealth, time, transport, horoscope and everything associated with us is favourable to us. We are lucky and blessed .Thank you Narayan for granting us the boon of lifelong good health because of which we are absolutely healthy. Thank you Narayan with your blessings we are peaceful and joyous, we are positive in thoughts, words and deeds and we are successful in all spheres of life. Narayan dhanyawad.

2) Energize Vaults - Visualize a rectangular drawer in which you store your money. Visualize Rs 2000 notes stacked in a row, followed by Rs 500/- , Rs100/- , Rs 50/-, Rs20/- Rs10/- and a silver bowl with various denomination of coins. Now address the locker 'You are lucky, the wealth kept in you prospers day by day.' Request the notes "Whenever you go to somebody fulfill their requirements, bring prosperity to them and come back to me in multiples." Now say the Narayan mantra, "I love you, I like you, I respect you, Narayan Bless you" and chant Ram Ram 56

3) Shanti Kalash Meditation – Visualize a Shanti Kalash (Peace Pot) above your crown chakra. Chant the mantra" Thank You Narayan, with your blessing I am filled with infinite peace, infinite peace, infinite peace. Repeat this mantra 14 times."

4) Value Addition - Add value to cash and kind (even food items) you give to others by saying Narayan Narayan or by saying the Narayan mantra.

5) Energize Dining Table/ Office table - Visualize the dining table/ office table and energize it with Shanti symbol, LRFC Carpet, Cho Ku Rei and Lucky symbol. Give the message that all that is kept on the table turns into Sanjeevini.

6) Sun Rays Meditation - Visualize that the sun rays entering your house is bringing happiness, peace, prosperity, growth, joy, bliss, enthusiasm and health sanjeevini. Also visualize your wishes materializing. This process has to be visualized for 5 minutes.

Finest Pure Veg Hotels & Resorts

The Byke

A HOTEL RETREAT

EAT GREEN • STAY EVERGREEN

Our Hotels : Matheran | Goa | Manali | Jaipur | Thane | Puri | UPCOMING BORIVALI (Mumbai)

THE BYKE HOSPITALITY LIMITED

Shree Shakambhari Corporate Park,Plot No.156-158,

Chakravati Ashok Complex, J.B.Nagar, Andheri (East), Mumbai - 400099.

T.: +91 22 67079666 | E.: sales@thebyke.com | W.: www.thebyke.com